6406

Hi
Chikitsa
No: 6

636.0896
M12 P

pasho chikitsa
by
~~Mamolal~~
Manulal lal.

NKP 1875

~~891.439~~

पशुचिकित्सा

जिसमें बड़े परीक्षक डाक्टर साहिब ने अत्यन्त स्पष्टता पूर्वक पशु के रोगों के वृत्तान्त और अति उत्तम परीक्षित औषधियां लिखी हैं ॥

श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीयुत जान्० सी० नेसफ़ील्ड साहब डैरेक्टर आफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन बीरे अवध की आज्ञानुसार

केनिङ्ग कालेज के संस्कृत अध्यापक पण्डित मगनलाल ने

उर्दू से हिन्दी भाषामें उल्था किया।

और

जिसकी शुद्धता सम्पूर्ण असल अंगरेज़ी पुस्तक के द्वारा मुन्शी हनूमान प्रसाद साहब ज़िलअ़ लखनऊ की पाठशालाओं के डिपुटी इन्स्पेक्टर ने—पण्डित देवीप्रसाद हेडमास्टर माडल स्कूल की सहायता से की

उक्त श्रीमहाराज के अनुशासन से अवध देशीय पाठ शाला के विद्यार्थियों के हेतु ॥

लखनऊ

पहिलीबार—मुन्शीनवलकिशोर के छापे खाने में छापी गई॥

नवम्बर सन् १८७५ ई०

विवेचना

जब पशु की भली भांति सावधानी रक्खी जाती और उनके अनुकूल चारा दिया जाता है तो वे बहुत काम रोगी होते हैं परन्तु जब उनको अत्यन्त चारा खिला देते वा उनके प्रमाण से न्यून वा अधिक वा भूखा रखते हैं तो वे मांदे होजाते हैं—जिन रोगों का वर्णन इस पुस्तक में लिखा है उनकी रुकावट इस प्रकार से होसक्ती है कि पशुके मालिक उनकी देखभाली और सावधानी अच्छे प्रकार से करें जिससे वे रोगों से बचे रहें—जो रोग पशु को होते हैं उनमें से कुछ रोग [सांसर्ग्गिक] अर्थात् उड़ कर लगने वाले होते हैं और कोई कोई रोग केवल मालिकों की असावधानी और उत्तम चराई न होने से उत्पन्न होते हैं॥

इस पुस्तक में पशुके रोग होजाने के हेतु अत्यन्त स्पष्टता पूर्व्वक लिखे हैं और जोकि उन रोगों के न होने का हेतु पशु के स्वामी की सावधानी रखने और उसके विश्वास पर सम्भव है इसलिये जो इन रोगों में से कोई रोग उन पशुओं को होवे केवल उनके मालिकों का दोष है पछतावे की बातहै कि ये लोग अत्यन्त उत्तम उपाय करने में भूल करते हैं अर्थात् सूखी घास वा पतावर इकट्ठी नहीं कर रखते हैं क्योंकि जब अनावृष्टि वा अति वृष्टि वा पशु को हैजा हो उस समय वह घास उनके काम में आवे॥

इस भूलका यह फल होताहै कि ऐसे समयमें पशुको निर्व्वलम्बन परमेश्वर पर छोड़ देते हैं कि जो कुछ उनको

मिलता है खाजाते हैं और बहुधा ऐसा होता है कि वे कोई ऐसी घास वा कोई ऐसी बूटी खाजाते हैं जो कड़वी वा विष भरी होतीहै—और जिन ज़िलओं में अत्यधिक वर्षा होती है वहां के पशु वह घास खाते हैं जो कुछ दिन तक प्रथम जलमें बूड़ी पड़ी रही थी इस हेतु से वे पशु रोग में फस जाते हैं चाहें वे आपही मांदे होजाते हों वा दूसरे पशुओं का रोग उनको लग जाता है—जिन मनुष्यों के पास पशु रहते हों उनको उचित है कि बहुतसा भूसा भर रक्खा करें यदि वर्षा न हो वा अति वृष्टि होवे अथवा पशु को [हैज़ा] होवे तो वह चारा उनके लिये उपयोगी होगा, जब कोई ऐसी विपत्ति पड़ेगी और पशु अच्छे प्रकार से छप्पर आदि स्थान में रहेंगे और घर का चारा भली भांति पावेंगे तो रोगोंसे बचे रहेंगे॥ इसके विशेष किसी किसी ऋतु में पशुओं के लिये स्थान की भी आवश्यकता होती है कि सूर्य्य की उष्णता वा वर्षा में भीजने से उनकी रक्षा हो और शीतकाल में रात्रि के समय सर्दी न खांय—यह स्मरण रहे कि जब पशु अति वर्षा में भीजेंगे वा ऐसे स्थान में बांधे जांयगे जहां जल भराहो वा ऐसे स्थानपर रक्खे जांयगे जहां उष्णकाल में मध्याह्न काल की धूप से और शीतकाल में रात्रि की [ओस] और सर्दी से रक्षा करने वाली कोई वस्तु न होगी तो अवश्य वे मांदे पड़ जांयगे—परन्तु पछतावे की बात है कि हिन्दुस्तान के पशुओं के साथ उनके मालिक बहुधा ऐसाही उपकार करते हैं—बड़े आश्चर्य्य की बात तो यह है कि हिन्दू लोग ऐसे पवित्र पशुओं से निर्दयता करते हैं चाहिये तो यों कि धर्म्म की रीति से उन पर कृपादृष्टि रक्खें वरन उनकी शुश्रूषा और प्रतिष्ठा ध्यान रक्खें—जिस स्थान में पशु रक्खे जावें उचित है कि वहां की भूमि उसके आस पास की भूमिसे बहुत उन्नत

हो और पानी भली भांति निकाल दिया जाया करे और छत भी अच्छी हो जिसमें पशु को धूप और वर्षा से रक्षा रहे और दीवारें भी हों जिसके कारण रात्रिको [ठण्ढी] और रोगकी वायु जानवर को न लगे–उस स्थान की खिड़कियां ऐसी होनी चाहिये कि सूर्य्य का प्रकाश वहां जा सके और दरवाजे ऐसे हों कि आने जानेमें पशु को किसी प्रकार का लोभ न हो और रोशनदान भी ऐसे हों जिसमें से उत्तम वायु भीतर आया करे और बुरी वायु ऊपर से निकल जाय–और वह मकान और उसके चारों ओर की भूमि स्वच्छ रहे और गोबर और मूत्र वहां से प्रति समय उठा दिया जावे, हिन्दुस्तान के पशुको प्रायः निकृष्ट जल पीना पड़ता है किस लिये कि शुद्ध और स्वच्छ जल उनको नहीं मिलता इसमें सन्देह नहीं है कि ऐसे अप्रबन्ध से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, सङ्ग्रह करता का यह मनोरथ नहीं है कि इस पुस्तक में हिन्दुस्तान के पशुओं को चारा देने वा जल पिलाने वा और प्रबन्धों का वर्णन विवेचना पूर्वक लिखे वरन उनके रोगोंका हेतु लिखना अभीष्ट है और इस बातकानिश्चय कर देने का मनोरथ है कि बहुधा मालिकों की भूल और आलस्य से पशुओं के रोग हो जाता है–गौ अथवा बैल के खाने भरका चारा जिसमें वे प्रसन्नता से रहें थोड़ेसे खर्च से मिल सक्ता है और उसमें इतनी छोटी सी लागत पड़ती है कि प्रत्येक मनुष्य जो [गाय] वा [बैल] को अपने काम में लाता है और जितना उससे लाभ उठाता है उसमें से उनके भोजन भरका चारा बिना लोभ सहजही मिल सक्ता है और यह भी समझना चाहिये कि जब [बैल] से खेतवगैरह जोताजायगा और गौका [दूध] लिया जायगा और [बछे] उत्पन्न होंगे तो जो कुछ उनके पालने में व्यय हुआ है उनके मालिकों को उससे विशेष

मिल जायगा इसलिये जो [पशुपति] अपने पशु को बेपरवाई से रक्खे वा अचेत न रहै वा उसकी सुस्ती वा आलस्य और असावधानी से वह रोगी हो जावे वा उसको हैजे की मांदगी होजावे तो यह उसके कर्म्म के फल हैं और उसका दोष वह आप अपने को दे और ऐसे मालिक को इस निर्द्दयता का उत्तर परमेश्वर के सम्मुख देना पड़ेगा ॥

इति विवेचना ॥

पशुचिकित्सा

प्रथम अध्याय

रेगडर पेस्ट रोग ॥

अर्थात्

चेचक, विस्फोटक के वर्णन में ॥

रोग का निदान ॥

यह रोग एक प्रकार का मुख्य ज्वर है जो रोगी पशु के समीप रहने से लग जाता है ॥

रोग का वर्णन ॥

सांसर्गिक रोगों में से यह ज्वर अति शीघ्र लग जाता है इसका यह कारण है कि पशु के समीप इधर उधर किसी मुख्य प्रकार का विष होता है वह उनके शरीरमें लग जाता और मुख्य करके वह चतुर्त्थ कोष्ठ में प्रवेश कर जाता उससे उनके अङ्गों में मुख्य दोष पैदा होजाते हैं ॥ जब यह रोग किसी पशु को होजाता है तो उसके उपचिह्न थोड़ेही समय में प्रकट होते हैं और बहुधा दो वा तीन दिन पीछे वह प्रकट होजाता है परन्तु कभी २ चौबीस घण्टे के भीतरही यह रोग प्रकट होजाता है ऐसा बहुत थोड़ा देखा गया है कि इक्कीसवें दिनसे पहिले उसके रूपक न प्रकट हुये हों ॥

रोग के उपचिह्न ॥

इस रोग की प्रथम पहिचान यह है कि पशुके शरीर में उष्णता अधिक होती और वह केवल उष्णता मापक यन्त्र से जानी जाती है परन्तु इसरोग के जिन चिह्नों को प्रत्येक मनुष्य देखकर समझ सक्ता है उनके तीन दर्ज्जे हैं ॥

पहिला दर्जा ॥

पहिले दर्जे की यह पहिचान है कि सुस्ती, कम्प, बाल का खड़ा होना, मुखका उष्ण होना, मुख के भीतरकी झिल्ली पर रुधिरका जमजाना, और थोड़ी २ रूखी खांसी का आना अर्थात् धांसना, कानोंका झुक जाना, बद्ध कोष्ठ रहना, गोबर में आंवका लिपटा रहना, क्षुधाका कमहोना, बहुधा तृषाका विशेष होना, पट्ठे और अदल मुख्य कर पीठ और कन्धों और कमर के पुट्ठों पर ऐंठन का होना पीठका टेढ़ा होजाना और चारों टांगोंका सिमट जाना, जुगाली अर्थात् पागुर का कम होना और अप्रबन्धित होजाना, दांतों का कट कटाना, जंभाई आना, रीढ़ की हड्डी का दुखना, नाड़ी का अति शीघ्र चलना ॥

दूसरा दर्जा ॥

दूसरे दर्जे की यह पहिचान है दांत, कान, सींग, रान और उन अङ्गों का जो आप हिल चल सक्ते हैं विपरीत गति होजाना अर्थात् कभी उष्ण कभी सर्द होजाना, जल्दी २ सांसका लेना भूख का जाता रहना, जुगाली अर्थात् पागुर का बन्द होजाना, आंखों से थोड़ा २ चीपड़ का बहना, रीढ़ की हड्डी का दुखना, जानवर का कूले की ओर मुख फेर-कर पड़ा रहना, प्रचण्ड ज्वर का होना, तृषा का अधिक होना, किसी वस्तु के निगलने में दुःख होना बड़े क्लेश से हिलना चलना, पुट्ठों में ऐंठन अधिक होजाना, नाड़ी का अति शीघ्र चलना और बेठिकाने रहना—मसूढ़ों और गालों की झिल्ली और जीभ में छोटे २ लाल २ दानों का होजाना, जीभमें कांटे पड़ जाना, अत्यन्त बद्ध कोष्ठ होना, गोबर में आंव लोहू का लिपटा रहना, गोबर करने वा मूत्र के स्थान के किनारों पर जो झिल्ली लिपटी होती है उसका रङ्ग बहुत लाल होना और सूखजाना, पेचश होना, और कभी २ मूत्र मलाशय का आगे को बढ़ आना ॥

तीसरे दर्जे की यह पहिचान है—आंखों से अधिक

तीसरा दर्जा ॥ चीपड़ का बहना, नथनों और मुखसे चिकनी [लार] अर्थात् पानीका अधिकतर बहना, खास लेनेसे अति दुर्गन्धका आना [मसूढ़ों] और [बाछों] और गालों और [मुखके] भीतर और [तालूमें] और [जीभ]पर और कभी २ [नथनों] के भीतर आखों के [ढेलों] में पपड़का बंध जाना और उनमें पीले २ छाले पड़ जाना, आगे के दांतों का ढीला होजाना जब यह चिह्न प्रकट हो चुकते हैं तब जानवर को दस्त आने लगजाते हैं और प्रथम छोटे २ कड़े गोबर के चोथ गिरते हैं और उनपर आंव लहू लिपटा रहता है—और पतले पानी से दस्त आते हैं—उसके पीछे केवल पतला पानी जिसमें आंव लहूके टुकड़े मिले होते हैं दस्त आते हैं उस में दुर्गन्ध बहुत आती है किसी२ समय जिल्द पर सूजन और बादी होजाती है जानवर बहुत सुस्त और मुर्देके समान होजाताहै—तृषा अधिक रहती है और कोई सी वस्तु गले में बड़े क्लेश से उतरती है और निगलने के समय खांसीका दुखभी होताहै—शरीर ठण्ढा होजाताहै और सींग और कान और टांगें और मुख ठण्ढा होजाता है ऐसे समय में प्रायः गौका गर्भ गिर जाता है—जानवर बेसुध पड़ा रहता है और उठने की सामर्थ्य नहीं रहती योंहीं पड़ा कराहा करता है सांस कठिनता से लेता है—पतले २ रुधिर भरे दस्त अपने आप होते जाते हैं नाड़ी के चलने का ज्ञान नहीं होता है परिणाम दो दिन से छः दिन तक मांदे रह कर मर जाता है—कभी कभी कण्ठ के दोनों ओर और थनों और चड्ढों और कन्धों और पसलियों के ऊपर दाने निकल आते हैं परन्तु सदैव दानोंकेही निकल आने से रोग का निदान नहीं होता और जब कभी वह निकल आते हैं तो उन जान-

वरों को जो उष्ण काल में मांदे होते हैं—ऐसे दानों का निकलना आरोग्य होने का ढंग समझना चाहिये क्योंकि जब इनके निकलने की अधिकता होती है तब पेचश का होना बहुत कम होने लगता है और बहुधा पशु नीरोग होजाते हैं परन्तु जब दाने नहीं निकलते और पेचिश बराबर बनी रहती है तो बहुधा जानवर मर जाता है॥

इस रोग के मध्ये हिन्दुस्तानियों का विचार॥

मवेशी के मालिक कोई २ हिन्दुस्तानी लोग इस रोग को एक प्रकारकी चेचक समझते हैं और यह उनका समझना ठीक है जब दाने शरीर में दिखाई देने लगते है तो वे इस रोग को माता कहते हैं और जब आमाशय और मलाशय के किनारे की झिल्ली ऐसी सूझ जाती है कि उसमें पीप लहू बहने लगता है तो उसे भीतर की माता कहते हैं—किसी २ अवस्था में मुख्य करके जब यह रोग शीघ्र प्रकट होजाता है तो जानवर को सरसाम रोग अर्थात् सन्न का रोग प्रकट होजाता है जिसके कारण घबराता है और इधर उधर झोंके खाकर गिर पड़ता है और बेहोश होकर मरजाता है॥

मुख्य पहचान॥

इस रोग की मुख्य पहचान यह है—आंखों और नथनों और मुखसे लसदार पानी बहने लगता है—मसूड़ों और दूसरे मुखके अङ्गों में छेद पड़ कर [पपड़] जम जाते हैं—पेचिश के दस्त आने लगते हैं—कभी ऐसा होता है कि शरीर पर दाने भी निकल आते हैं—परन्तु यह सब चिह्न सदैव नहींप्रकट होते हैं, हां; उनमें से कोई २ अवश्य प्रकट हो आते हैं॥

रोग की अवधि॥

यह रोग चौबीस घण्टे से बारह वा सोलह दिन तक, रहता है परन्तु बहुधा तीन दिन से ९ नौ दिन तक रहता है॥

रोग की चिकित्सा ॥

रेण्डर देस्ट अर्थात् चेचक वा विस्फोटक उस प्रकार के रोगों में से है जिनका बन्द कर देना असम्भव है सो इसमें ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे जानवर के शरीर में से विष का अंश निकल जाय और वह पशु भला चङ्गा होजाय—हिन्दुस्तान में बहुधा इस रोग में उत्तम फलदायक उपाय किया जाता है परन्तु इङ्गलिस्तान और यूरोप के देश में इस रोगका उपाय कम होता है—इस रोग में आरोग्य हो जाने की बड़ी पहचान यह है कि शरीर पर दाने निकल आवें और जितने अधिकतर दाने निकलेंगे उतनेही शीघ्र आरोग्य होजाने का दृढ़ भरोसा पड़ता है—इस रोगमें सबसे बुरी अवस्था यह है कि शरीर पर दाने न निकलें और पेचिशके दस्तबारम्बार आवें—इस रोगकी चिकित्सा में इस बातका अत्यन्त ध्यान रखना चाहिये कि जानवर के शरीरमें से विषका अंश निकालने में चित्त देकर बड़ी सावधानी से सहायता और श्रम किया जाय और उसका उपाय भली भांति किया जाय और खानेको उत्तम भोजन खिलाया जाय जिससे उसका बल न घट जाय ॥

जो इस रोगमें प्रथमही जानवर के क़ब्ज़ जान पड़े तो आमाशय के नरम करने वाली औषधियां दीजांय जैसा सेंधा नमक, काला नमक, ३॥ तोले से ७॥ तोले तक दिन भरमें एक वा दोबेर खिला दें यहां तक खिलावे कि उसका मल नरम पड़ जाय ॥

इस रोग का एक उपाय यह भी है कि दिन भर में दो वा तीन बेर उष्ण जल और तेल की पिचकारी देवे परन्तु बहुत कड़ी औषधियों का जुल्लाव हानिकारक होगा और जानवर निर्व्वल होजायगा जब आमाशय नरम हो जायगा तो विषका अंश सहजमें छूट जायगा पर इस बात का ध्यान रहे कि बराबर दस्त न आये जांय नहीं तो जान॰

वर दुर्ब्बल और कमज़ोर होजायगा जो चौबीस घण्टे से अधिक समय तक आंव लहू का मिला हुआ दस्त आवे तो दस्त रोकनेकी औषधि दीजाय [चौबीसवीं औषधि देखो] वा छटी औषधि जो नीचे लिखी है जिसे मिस्टर थेकर साहबने मंदरासमें जांचा है, (यह साहब मंदरास में पशु के डाक्टर हैं)॥

कपूर,	शोरा,	धतूरे के बीज,	चिरायता,	ताड़ी
९ मासे,	९ मासे,	४ मासे,	९ मासे,	।= आधपाव,

यह औषधि इस रोग के पहले दर्जे में दीजाय—और मिस्टर थेकर साहब कासम्मत यह है कि जब दूसरे दरजे का आरम्भ होजाय और चौबीस घण्टे से अधिक समय तक दस्त होतेरहें तो ऊपर लिखी हुई औषधिमें ९ मासे [माजू] भी महीन पीस कर मिला दिया जाय यह वह्न कौष्ठिक औषधि बारह २ घण्टे के पीछे बराबर दीजाय यहां तक कि दस्त बन्द होजांय॥

खाने को॥ चावल का मांड़ गाढ़ा गाढ़ा दें जब तक इस रोग का प्रथम दर्जा रहे और पेट में आंव रहे तब तक जल दिया जाय परन्तु जब [मल] नरम होजाय तो बहुत थोड़ा जल दिया जाय वरन जल थोड़ा भी न दिया जाय और जब दस्त आने लगें तो जानवर को बिलकुल पानी न दें चाहे पानी के बदले थोड़ा २ चावल का मांड़ दें—बहुधा ऐसा होता है कि जब जानवर को दस्त आते हैं तो प्यास अधिक लगती है और पानी बहुत पीता परन्तु जो ऐसे समय में पानी दिया जायगा तो दस्त अधिक आने लगेंगे और जानवर अत्यन्त निर्ब्बल होजा-यगा जब दस्त बन्द होजांय तो औषधि भी देनी बन्द की जाय अब केवल जानवर की खाने पीने से सावधानी रक्खी जाय और खाने को चावल का मांड़ थोड़ा सा और हरी दूब वा [कोतों] घास वा और कोई हरी भरी वस्तु दी जाय

और चावल के मांड़ में थोड़ासा [नमक] भी मिला दिया जाय वा लाहोरी नमक का एक ढेला उसके समीप कहीं रख दिया जाय जब जानवर का जी चाहे उसे चाटले—जब जानवर को इसरोग [रिण्डरपेस्ट] से आराम होने लगे तो कड़ावा सूखा वा रेशे दार चारा जानवर को कभी न दिया जाय किस लिये कि उस आमाशय में इतना बल कहां है जो ऐसे चारे को भली भांति पचा सके वरन ऐसे चारे से अपच और पेट के रोग होने का भय रहता है और रोग पलट आने का सन्देह रहता है ॥

भेड़ी और बकरियां बहुधा रिण्डर पेस्ट रोग में फसजाती हैं ॥

भेड़ बकरियों को भी यह रिण्डरपेस्ट रोग होजाता है परन्तु उनमें यह रोग इतना शीघ्र नहीं लग जाता है जितना गाय, भैंस, बैल आदि में प्रवेश कर जाता है परन्तु सम्भव है कि उनके द्वारा से यह रोग मवेशी के एक समूह से दूसरे समूह में पहुंच जाय चाहें वे आप इस रोग से बचे रहें ॥

रोग की चिकित्सा

जो भेड़ और बकरियों के [रिण्डरपेस्ट] रोग होजाय उनकी भी यही चिकित्सा होसकी है जो पहले लिखी गई परन्तु जितनी औषधि गौ, बैल, भैंस आदि को दीजाती है उसका छठवां भाग भेड़ियों और बकरियों को देना चाहिये ॥

इस रोग के बन्द करने का उपाय॥

इस सांसर्गिक रोग के बन्द करने के लिये जो चिकित्सा छठवें अध्याय में लिखी हैं उन पर अच्छे प्रकार ध्यान रखना चाहिये जिससे ये रोग और जानवरों में न फैल जाय ॥

—०—

दूसरा अध्याय ॥

मुख और पैरों के रोग के विषय में ॥

यहरोग एक प्रकार का सांसर्गिक ज्वर होता है और उसके साथ मुख और पांव और थनमें दाने निकल आते हैं—कभी २ केवल मुख के भीतरदाने निकलते हैं और कभी २ पावोंमें यहरोग मवेशी अर्थात् गाय, बैल, भैंस आदि और भेड़ी सूअर मुर्गी और बतक आदि को होता है और जो मनुष्य उस गौका दूध पीता है जिसको यह रोग होरहा हो उसको भी यह रोग होजाता है—यह न्यूनाधिक हिन्दुस्तान के प्रत्येक सूबे में सदैव रहता है और जानवर अपनी उमर भरमें कई बार इस रोग में फंसजाता है ॥

रोग का विवर्ण ॥

प्रायः इस रोग के होने का यह कारण होता है कि रोगी जानवरों के समीप से नीरोग जानवरोंमें उड़ कर लग जाता है परन्तु कभी२ बिना उड़कर लगजाने आपसे आपभी यह रोग जानवर के होजाता है परन्तु ऐसी अवस्थामें इसका यह कारण होताहै कि जिस स्थान पर जानवरको रखते हैं वह मैला होता है ॥

रोग होजाने का कारण ॥

कभी२ इसके कारण का निश्चित करना कठिन पड़ जाताहै परन्तु जब जानवर धोया धाया साफ रक्खा जाता है और दूसरे पशुओं में उसे नहीं मिलने देते और बारम्बार नहीं जाने देते तो यह रोग उस पशुके नहीं होता है सो अब इससे विदित हुआ कि यह रोग अवश्य संसर्गी है ॥

परीक्षा करने से जाना गया है कि जब यह रोग किसी जानवर को लगजाताहै तो चौबीस घण्टे से तीन वा चार दिनके पीछे तक उसके उपचिह्न प्रकट होते हैं परन्तु बहुधा छत्तीसघण्टे केपीछे रोगके उपचिह्न प्रकट होतेहैं ॥

प्रथम यह चिह्न प्रकट होते हैं कि जानवर कांपने लगता है उसके पीछे ज्वर चढ़ आता है और मुख गरम होजाता है और सींग भी

रोगकी पहिचान॥

गरम होजाते हैं होठ चटक जाते हैं और [लार] भी बहने लगती है—बैल आदि के मुख और खुरमें दाने निकल आतेहैं और गौके थन और भिटनियोंमें दाने निकल आते हैं ये दाने फफोलों के समान और सेम के बीज के बराबर होते हैं—कभी २ नाक की झिल्ली में भी दाने पड़जाते हैं और अठारह वा चौबीस घण्टे के भीतर फूटजाते हैं और मुरझाकर लाल २ चट्टे होजाते हैं और यह चट्टे याती शीघ्र अच्छे होजाते हैं नहीं तो उनमें छिद्र पड़जाते हैं प्रायः जीभ में भी दाने निकल आतेहैं और कभी २ मसूड़ों और तालू और गालोंके भीतरभी दानेनिकल आते हैं और जहां खुर और पांवकी खाल अर्थात् घाई मिलीहै वहांऔर खुरों के भीतर भी दाने पड़जाते हैं और मुख में पीड़ा बहुत होती है और ज्वर भी अधिक होता है इस हेतुसे जानवर चारा नहीं खाता और जिस पांव में दाने होते हैं उस से बहुत लंगड़ा कर चलता है—जो बैल को यह रोग होवे और उस से बराबर परिश्रम वा काम लिया जाय तो इस रोग की अत्यन्त अधिकता होजायगी पांव सूज जांयगे खुर गिर जांयगे और कभी २ टांगों में फोड़े निकल आवेंगे—जब गौके थन और भिटनियों में दाने निकल आते हैं तब ये दोनों सूज जाते हैं और बहुत पीड़ा करती हैं—जो रोगी गौका बच्चा उसका दूध पीता है तो वह भी रोगी हो जाता है—जब दुधैल गौको यह रोग होता है और अहीर उसका दूध दुहता है तो उसके हाथ की रगड़ से छाती के फफोले छिल जातेहैं और बड़ी पीड़ा होती है और कभी २ दूध न दोहने से थन सूज जाते हैं और जलन होने लगती है॥

जो रोगी गौका दूध दोहकर हाथ अच्छी तरह नहीं धोते हैं और उसी हाथसे नीरोग गौका दूध दोहते हैं तो उसकारोग उस गाय के थन में लग जाताहै ॥

भेड़ में भी इस रोग के चिह्न वैसेही प्रकट होते हैं जैसे अभी कहे गये हैं परन्तु बहुधा पांवमें बहुत पीड़ा होती है और उसका अत्यन्त पतला हाल हो जाता है—जब यह रोग सुअर के होता है तो उस के भी पावों में बहुत पीड़ा होती है और कभी कभी खुरभी गिर जाते हैं और उस की पीड़ा कराहने से जानी जातीहै—और दूसरे पशुओं कीअपेक्षा सुअर को यह रोग अधिक बढ़ जाता है ॥

इस रोग को भेड़ी के लगने के उपचिह्न ॥

कभी इस रोग को लोग धोखेसे रेण्डरपेस्ट समझते हैं हिन्दुस्तान में जो यह रोग मुख और पैर में होता है तो इस में दस्त नहीं होते परन्तु इसके विपरीत रेण्डरपेस्ट रोगमेंदस्त और पेचिश अवश्य होती है और पांवों में रोग नहीं होता—परन्तु यह सम्भव है कि जानवर दोनों प्रकार के रोगों में साथ ही फसजांय यद्यपि ऐसा कम देखने में आया है ॥

इस रोग की पहचान औररेण्डरपेस्ट रोग की पहचान में अन्तर ॥

जिस जानवर को यह रोग हो जाय और उसका इलाज भली भांति किया जाय तो ज्वर के सम्पूर्ण रूपक तीन चार दिन में ही जाते रहते हैं और बारह वा पन्द्रह दिन में जानवर को आरोग्यता हो जाती है और बहुत बल घटने नहीं पाता परन्तु जो उसकी संभाल न की जाती और वह जानवर बैल है और उससे मिहनत ली जाती है तो प्रचण्ड ज्वर हो जाता है क्षुधा कम हो जाती है और खुर और पांवों के बीच में छेद पड़ जाने से खुर गिरजाते हैं और टांगें बहुत सूज जाती हैं और उनमें फोड़े निकल आते

रोग की अवधि ॥

हैं निदान दस बारह दिन में वह जानवर मर जाता है और यूरोप के [मवेशी] बलिष्ठ और बड़े होते हैं और हिन्दुस्तान के मवेशी निर्ब्बल और छोटे होते हैं परन्तु वहां के जानवर यहां के जानवरों से अधिक इस रोग से दुःख पाते हैं और कभी २ यह रोग थोड़ा होता है और कभी अधिक—ग्रेटब्रिटिन में जब इस रोगकी अधिकता होतीहै सौ मेंसे ५० जानवर तक मरजाते हैं परन्तु हिन्दुस्तानके विपरीत यहां इस रोग से जो बहुत मरते हैं तो सौ मेंसे दो वा तीन जानवर वरन जो अच्छी सावधानी से उपाय किया जाय तो जानवर बहुत कम मरने पाता है॥

चिकित्सा॥

जानवर को किसी स्थान के भीतर छाया में रखना चाहिये और साफ रखना चाहिये और उस स्थानकी पृथ्वी अति शुद्ध और स्वच्छ रहे और वह सुन्दर हवा दार हो—जानवर का मुख दिन भर में दो तीन बेर उष्ण जल से धोया जाय उसके पीछे तड़ेडा किया जाय (औषधि ३४ वीं देखो) और दिन भरमें दो बेर उसके पांव उष्ण जलसे खूब मल २कर धोये जांय और शुष्क करके खुरोंके बीच में से भली भांति मैल मिट्टी निकाली जाय और घावों पर पट्टी बांधी जाय, (औषधि ४९ वीं देखो) थन और झिटनियों और अन्य २ अङ्गोंमें जहां २ घाव पड़गये हों उन्हें साफरखना चाहिये और एकही पट्टी बारम्बार न बांधनी चाहिये जिस पर मक्खियां बैठ कर घावोंमें कीड़े न डालदें जो झिटनियों वा मुखपर मक्खियां बैठें तो दिनभरमें एक वा दो बार कपूर के तेल से उसे धोडालें—जो प्रचण्ड होवे तो दिन भर में दो बेर जुल्लाब दो (औषधि ७ वा ८ देखो)॥

भोजन॥

चारा केवल हरा नरम दूबका दिया जाय और महीन चावल का मांड बहुतसा दिया जाय (औषधि ६० देखो) और उसमें दिन भर

में दो वा तीन बेर ५ वा ७॥ तोले गुड़ और खाने का नमक २॥ तोले मिला दिया जाय॥

हिन्दुस्तानी जो इस रोग का यह उपाय करते हैं कि रोगी जानवरों को [टखनों] तक पानी वा कीचड़ में बांध रखते हैं तो इस उपाय से इतना तो लाभ है कि मक्खियां घावोंमें गड्ढे नहीं करने पातीं परन्तु कभी २ रेत वा कीचड़ बाल और खुरों के भीतर जो चिराव होताहै उनमें घुस जाता हैं और खुरको गिरा देताहैं॥

इस रोग के बन्द करने का उपाय॥

जोकि बहुधा यह रोग उड़ कर लग जाता है और आपसे आप नहीं होता इसलिये जो उपाय सांसर्गिक रोग के बन्द करने के लिये छठवें अध्याय में लिखे हैं उनको करना चाहिये॥

तीसरा अध्याय

प्लूरून्यूमोनिया रोग अर्थात् ज़ातुरिया रोगों के विषय में॥

रोग का वर्णन॥

यह रोग फेंफड़े में और छाती के किनारे की झिल्ली में होता है यह भी रोग संसर्गी रोगों में से है और मुख्य करके सवेशी को होता है और प्रत्येक प्रकार के मवेशी को कैसी ही उमर हो चाहे जब प्रत्येक विलायत में और देशों में होता है और कभी शीघ्र होता है कभी देर से और एक महीने से चार महीने तक रहता है इससे भी कभी बढ़ जाता है यह कुछ अवश्य नहीं है कि समूह में प्रत्येक जानवर को यह रोग होवे सम्पूर्ण रोगों से इसके फैलने का एक निराला ही ढंग है॥

रोग होने का कारण॥

बहुधा अंगरेज़ी डाक्टरों का यह सम्मत है कि यह रोग सांसर्गिक रोगों मेंसे है और परीक्षा से यह निश्चय हुआ है कि जिन पशुओं के यह रोग होता है वह अवश्य ऐसे स्थान

पर बंधा होता है जहां यह रोग शीघ्र उसमें प्रवेश कर जाता है और जो उसका भली भांति खोज किया जाय तो निश्चय हो जायगा कि ऐसाही हुआ था [यूरोप] में इस रोगके लगजाने के एक महीने वा छः सप्ताह के पीछे उस के उपचिह्न प्रकट होते हैं और बहुधा इतनेही समय में हिन्दुस्तान में भी रोगके उपचिह्न प्रकट हो जाते हैं ॥

रोगकी पहचान ॥

वैद्य हकीम शालिहोत्री को इस रोगके उपचिह्न यह जाने जांयगे कि पशु के शरीर में अधिक हरारत जान पड़ेगी और जब इस रोगके पहचानने का मुख्य [आला] अर्थात् यन्त्र कान में लगाके फेफड़े की हरकत सुनेगा और पशु कीछाती आदि बजाकर देखेगा तो और बुरे २ उपचिह्नभी जान पड़ेंगे परन्तु जो उपचिह्न मवेशी के मालिकों को जानने चाहिये उनको विधि वार वर्णन करना उचित है ॥

विदित होकि प्रथम चिह्न येहैंकि पशुपूर्व्वकी अपेक्षा अब कुछ बलवान और आरोग्य जानपड़ेगा और कुछदिन तक वह उसी तरह से बना रहेगा उसके पीछे उसके पालक को यह जानपड़ेगा कि जानवर कांपरहा है और नाड़ी भी शीघ्र चलने लगती है मुखभी गरम है थुथुनी रूखी है रूखीखांसी आती है भूख जातीरहीहै और जो दुधैल गाय होगीतो दूध कमदेगी आशय यहहै कि दोही तीन दिन के भीतर ज्वरके चिह्न प्रकटहोने लगते हैं अर्थात् बाल खड़े होजाते हैं मुख बहुत गरम होजाताहै सांससे दुर्गन्ध आने लगती है खांसी और भी अधिक होजाती है और खांसने में बड़ी पीड़ा होतीहै और जानवर सांस अति शीघ्र और कठिनता से लेता है और नाड़ी तेज और भारी हो जाती है और मिनट भरमें ८० से १०० बारतक चलती है परन्तु फिर थोड़ी देरके पीछे अति मन्द और निर्ब्बल हो- जातीहै पशु अपनी नाकको आगेको बढ़ाये रहताहै जिस

में वह सांस अति सहजसे लेसके परन्तु जब सांस लेता है तो कराहता है—नथने बहुत फैलजाते हैं और सांस बहुत जल्दी २ लेता है, और जब खड़ा होताहै तो घुटना मोड़ कर खड़ा होता है और जब लेटता है तो छाती की हड्डी धरती से लगी रहती है और जो केवल छातीके एकही तर्फ पीड़ा होती है तो जानवर उसी ओर जोर डालकर बैठता है जिसमें दूसरी ओर जो फेफड़ा अच्छा है उस से सुखपूर्व्वक सहजमें सांस लेसके कभी २ पेट फूलने के भी रूपक प्रकट होतेहैं [अध्याय ९ देखो] और बहुधा आंखों और नाकसे पानी बहने लगता है सींग और त्वचा ठण्ढे होजाते हैं और सांस से दुर्गन्धि आती है और उसके पीछे खांसी भी बहुत जल्दी २ आती है परन्तु जोरसे नहीं आती है और खाल सूखकर तनजातीहै पशुका बुराहाल होजाता है और उसका शरीर घुलने लगताहै पसलियों के बीचमें अंगुली से दबानेसे पीड़ा जान पड़ती है और जानवर कराहने लगताहै—इस रोगके अन्तमें जानवर को दस्तहो जाते हैं और ज्वरतो अहर्न्निश थोड़ा और बहुत बनाही रहता है परन्तु जब ज्वर कमहो जाता है तब जानवर की भूख खुलजातीहै वरन सम्पूर्ण रोगी रहनेके दिनोंमें चारा खूब खाताहै परन्तु ज्यों ज्यों रोग बढ़ता जाताहै फेफड़ा बन्द और भारी होता जाताहै और सांस लेनेमें क्लेश होता जाता है और रुधिर भली भांति साफ नहीं होता इस कारणसे जानवर रोज रोज दुबला होताजाता है निदान दम घुटकर मर जाता है ॥

जब यह रोग पुराना पड़ जाता है तो केवल फेफड़े का एकभाग सूजजाताहै और प्रत्यक्षमें जानवर अच्छाहो जाता है परन्तु उसकी बुरीदशा रहतीहै किसी २ समय में यहरोग बढ़ते २ फेफड़े के दोनों ओर होजाता है और जानवर सांस रुक रुक कर मरजाता है ॥

रोगकी अवधि ॥

रोगकी अवधि रोगकी दशा देखने से जान पड़ती है अर्थात् जो रोग प्रबल और प्रचण्ड होता है तो एक सप्ताह वा दसदिन में मरजाता है परन्तु जो स्वल्प होता है तो पशु दो तीन वरन छः महीनेमें मरजाताहै यह बहुधा रीतिहै किजिस जानवर को जातुर्रिया अर्थात् फेफड़े का रोग होता है उनका इलाज करने से बहुत कम लाभ होता है इसी कारण से यूरोप और अन्यदेशों में जहां गौ आदिका मांसखाते हैं वहां यह रीति है कि जब पशुको यह रोग होताहै उसे मारडालते हैं और जितना रुपया इसप्रकार से मिलसक्ता है वसूल करलेते हैं और हानि से बचे रहते हैं जो जानवरका उपायहो और वह मरने लगे तो उसका मांसभी व्यर्थ जाय परन्तु हिन्दुस्तान में यह नहीं होसक्ता क्योंकि हिन्दुओं के मतमें जानवरों के मारडालने का बड़ा पाप है और पछतावेका समय यह है कि जिनज़िलओं में यह रोग जानवरों को होता है वहां के लोग यह नहीं जानते हैं कि यह रोग एक जानवर से दूसरे जानवर को लगजाता है इसलिये इस मूर्खताके कारण वे रोगीपशुओं को नीरोग पशुओं से पृथक् नहीं रखते इसलिये यह रोग सारे समूहभरमें फैलजाता है—जोकि (जातुरीअ) फेफड़े का रोग कभी २ अपने गुणोंके विपरीत उपचिह्न दिखलाता है अर्थात् जिस पशुके यह रोग होता है उन में से उन पशुओं में नहीं लगजाता है जो उनके पासबंधे रहते हैं वरन दूरके पशुओं में पहुंचजाता है और जोकि इस रोगमें और रोगों की अपेक्षा पशुके शरीरसे रोग के उपचिह्न बहुत देरके पीछे प्रकट होते हैं और उस को अत्यन्त पीड़ाहोती है इसलिये इंगलिस्तान में पशुओं के मालिकों को बहुत कालसे इसबात में सन्देहहै कि यह रोग संसर्गी रोगोंमेंसे है वा नहीं परन्तु अब यूरोप और

आस्ट्रेलिया में सब लोग इस बात को मानते हैं कि यह रोग अत्यन्त उत्कट संसर्गी है यद्यपि हिन्दुस्तान में यह रोग पशु को बहुधा अतिकाल तक बना रहता है परन्तु प्राय: इस रोग से पशु मरजाते हैं इसका हेतु यह है कि जबतक यह रोग शरीरपर अच्छीतरह प्रकट नहींहोजाता तबतक कोई इस रोगकी संभाल नहीं करता चाहिये कि जब कोई पशु इसरोगमें फसजाय उसे अति सावधानी से किसी मकानमें रक्खें और उसके उपायकरें मकानअच्छा हवादार हो और बहुत साफ रक्खा जाय जिस में उत्तम साफ वायु सदैवआवे ॥

जो जानवर के क़ब्ज़ हो तो औषधि नम्बर ५ पिलाना चाहिये—जब ज्वरके सब उपचिह्न जाते रहें तो औषधि नम्बर १८ में का चूर्ण चावल के मांड़ में मिला कर दिन भर में एक वा दो बेर दिया जाय—जो सांस लेने में बड़ी पीड़ा होती हो तो अच्छी तरह गरम पानी से छाती के चारों ओर से बफारा दिया जाय जैसा औषधि नम्बर ५५ में लिखा है—यदि आमाशय में अजीर्ण जानपड़े तो ५ वा ८ तोले गुड़ और ५ तोले खाने का नमक अलसी के मांड़ में दिनभर में एक दोबेर दिया जाय जैसा औषधि नम्बर ५८ में लिखा है जो पशु को निर्ब्बलता अधिक दीखपड़े तो सेर सेर भर मांड़ में ५ तोले ताड़ी मिलाकर दिन भरमें एक वा दो बेर पिला दें ॥

भोजन ॥ जानवर को हरी घास और नरम चारा दिया जाय और चावल का मांड़ और शुद्ध जल जब वह चाहे दिया जाय सड़ी और सूखी घास और पतावर न देना चाहिये ज्वर होतो जब नाड़ी अति शीघ्र चलती हो तो जुल्लाब न देना चाहिये परन्तु यह स्मरण रहे कि यह रोग बहुधा असाध्य होता है और जो कभी दैव योगसे पशु अच्छा भी हो जाता है तो

सदैव निर्ब्बल मरियल रहताहै जब किसी पशुको यह रोग होताहै तो उसे उसी समय और जानवरों के पास से तुरन्त पृथक् करके जुदा रखना चाहिये और जो मनुष्य रोगी पशुओंके पास आवें फिर वे आरोग्य पशुओं के पास न जावें (अध्याय८वांदेखो) किसी समयमें लोगों को यह निश्चय था कि जो जानवर इस रोग से मरगया हो तो उसके फेफड़े में से बिगड़ा हुआ मवाद निकाल कर आरोग्य जानवर को उसका टीका दियाजाय तो प्रथम उसे कुछ हलका सा असर इस रोग का जान पड़ता है फिर उसे यह रोग कभी नहीं होता परन्तु अब हकीमों की परीक्षा करने से जान पड़ा कि इस प्रकार का टीका लगाने से कुछ यह अवश्य नहीं है कि यह रोग आरोग्य पशुओं को एक बेरहो फिर कभी नहीं हो॥

चौथा अध्याय॥

अन्थरैक्सफीवर अर्थात् तप दमवी जो रुधिर विकार से पैदा होता है उसके वर्णन में॥

रोग का वर्णन॥

यह रोग दमवी कहाता है और हिन्दुस्तान में संसर्ग से उत्पन्न होता है परन्तु ठण्ढे देशों में संसर्ग से नहीं उत्पन्न होता—इस रोगमें बहुधा चमड़े के किसी भागमें सूजन होजाती है यथा कमर पर वा आगे वा पीछेके भागमें वा गलेमें और कभी २ जिह्वा में—यह सूजन बादी की होतीहै और हाथसे दबाने से पिचक जाती है परीक्षा से जान पड़ा है कि यह और पशुओंमें प्रवेश करजाताहै और मनुष्यों को भी फफोले के सदृश चमकदार होजाता है॥

रोग होनेका कारण

जब जानवरों को कुछ दिन तक बहुत बुरा वा सूखा वा नरकुल का चारा दिया जाता है और उसके पीछे उन्हें हरे भरे खेतों में छोड़

देते हैं तो प्रायश: वे मांदे पड़जाते हैं मुख्य करके थोड़ी वय के पशु अति शीघ्र इस रोग में फस जाते हैं क्योंकि उनमें बूढ़े पशु की अपेक्षा रुधिर एकाएकी बहुत शीघ्र उत्पन्न होता है—इस रोगमें रुधिर अधिक पैदा होकर बिगड़ जाता है और रगों से बहकर ऊपर निकल आता है—जो पशु बहुत मोटे ताजे होते हैं उन्हीं को यह रोग विशेष करके होता है—मुख्य करके वे पशु जो प्रथम दुबले पतले हों और अब वे बलवान और मोटे होते जाते हों वो इस रोग में शीघ्रही फस जांयगे—इसके विशेष जिन ऋतुओं में पशुओं को छाया के स्थानमें नहीं रखते और दिनको वे गरमी में रहते हैं और रात को ठण्ढ खाते हैं तो वे शीघ्रही मांदे पड़ जाते हैं—इङ्गलिस्तान में जहां जहां सफ़ाई नहीं होती थी वहां बहुधा यह रोग होता था परन्तु जब से ये स्थान साफ़ रहते हैं और मोरी नाले अच्छे साफ़ बनगये हैं तब से यह रोग नष्ट होगया है—यूरोप के किसी २ देशों के बड़े भारी जङ्गल में यह रोग किसी २ ऋतु में न्यूनाधिक फैला रहता है परन्तु केवल उन स्थानों पर जहां मोरी नाले खराब हैं और भले प्रकार पर सफ़ाई नहीं होती—इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तान में इस रोग का उत्तम कारण यह होता है कि पशु ऐसे स्थान पर चरते हैं जहां दलदल होती है—जब समूह में एक भी पशु के यह रोग होजाता है तो निश्चय है कि और पशुओं को भी होजाय उनके रोगी होने का कारण केवल रोग का संसर्गही नहीं होताहै वरन यह भी कारण होता है जिस बेपरवाही से रोगी जानवर को चराया है और जिस प्रकार उसकी संभाल नहीं की उसी प्रकार इस आरोग्य पशु के पालन करने में भी ध्यान नहीं लगाया ॥

6406

यह रोग पशु को तत्क्षण लग जाता है बहुधा ऐसा होता है अभी तो पशु भला चङ्गा था परन्तु एक दो घण्टे के पीछे जो देखा तो बहुत सुस्त औ लथड़ाया हुआ पाया और हाथ पांव जकड़े पाये और देखा कि हाथ पैर बड़ी कठिनता से हिलाता है—थोड़े ही मिनटों में किसी २ अङ्गों में सूजन दिखाई देगी मुख्य करके कमर वा मुख वा पीठकी ओर वा कण्ठ वा जिह्वा में कभी २ यह रोग छाती और आमाशय के किनारों पर वा ब्रह्माण्ड में होता है जब इस सूजन को ध्यान करके देखो और अंगुली से दबाओ तो चरचराने लगती है—और यह जान पड़ता है कि जानों इसके भीतर वायु भरी हुई है ये बातें इस कारणसे पैदा होती है कि रुधिरके फटने से एक प्रकार की ग्यास अर्थात् वायु उत्पन्न होजाती है उससे खाल फूल जाती है—जो गला और फेफड़ा अधिक सूज जाता है तो सांस लेने में बड़ी पीड़ा होती है जो ब्रह्माण्ड में रोग होता है तो उसकी परीक्षा विना स्पर्श करनेके प्रकट होजाती है—जो तिल्ली और अन्य कोई शरीर का भाग जो आमाशय में घुस कर माहह से भरजाते हैं तो आमाशय की पीड़ा के उपचिह्न प्रकट होते हैं—जब कोई अङ्ग सूज जाता है तो थोड़े से समय में उसके हिलने डोलने में कठिनता पड़ जातीहै और हिलने चलने से लाचार होजाता है मानों धरती में गड़ा जाता है—जोकि यह रोग स्वतः गति करने वाले अङ्गों में अति शीघ्र फैल जाता है और सूजन एका एकी बढ़ जातीहै और जानवर को स्पर्शका ज्ञान और हिलनेडोलनेकी सामर्थ्य नहींरहती इसलिये पञ्जाब देश में लोग इसको गोली कहते हैं क्योंकि वे यह कहते हैं यह रोग काहे को है वरन जानवर को कुदरती गोली लगती है—जानवर बहुत शीघ्र सांस लेनेलगताहै और

रोगकी पहचान॥

कराहता है और नाड़ी निर्व्बल और तेज चलने लगती है और अति शीघ्र बल घट जाता है और द्रव्य अङ्गों पर सूजन क्षण २ में बढ़ती जाती है परिणाम पशु थोड़ेही घण्टों में मरजाता है ॥

रोग की अवधि ॥

जब सूजन अधिक होजाती है वा सांस के टूटने से यह जान पड़ता है कि फेफड़े में रोगका रुधिर अधिक भराहुआ है तो ऐसेसमय में कोई उपाय गुणदायक नहीं होता--जो जानवर को सूजन होने के प्रथम देखें कि पशु को अचैनी है तो तीन वा चार नम्बर की औषधि तुरन्त दें और प्रति दिन आठ वा दस घण्टे के अन्तर में उसको देते रहें यहां तक देवें कि उसके दस्त होने लगें—और यह भी उत्तम उपाय है कि एक २ दो २ घण्टे के अन्तर से ५ तोले ताड़ी और ८ मासे कपूर पावभर मांड में अच्छी तरह मिला कर देवें—कोई २ मनुष्य फस्दकोभी इस रोगका एक उपाय जानते हैं परन्तु यह उपाय सन्दिग्ध है और इस रोग के प्रथम दर्जे मेंही होसक्ता है क्योंकि उसके पीछे रुधिर दुष्ट और मलिन और जमा हुआ और काला हो जाता है कि जब नश्तर दिया जाता है तो वह रुधिर रग से नहीं निकलता—जानवर को छाया में रखना चाहिये—और अच्छा शुद्ध जल देना चाहिये और उसमें खाने का नमक मिला देना चाहिये—जब समूह में से एक जानवर मांदाहोता है तो उसके साथके और जानवर भी प्रायः मांदे पड़जाते हैं इसलिये उचित है कि उनमें से प्रत्येक जानवरों को उसकी उमर के अनुसार नरम औषधि नम्बर ५ की लिखीहुई दें और पानीमें थोड़ा सा नमक और शोरा मिलाकर दिया करें—सब पशुओं को चारा साफ़ और उत्तम दिया करें—और बहुधा उन्हें टहलाया करें—यह भी एक उत्तम उपाय है कि

प्रत्येक जानवर के कण्ठ के नीचे की लटकती हुई खालको नाथ दे (औषधि नम्बर ६६ देखो) परीक्षा करने से जाना गया है कि जब यह उपाय किया जाता है और इसके साथ ताज़ा और शीघ्र पचजाने वाला चारा दिया जाता है तो प्रायः जानवर इस रोग से बचे रहते हैं ॥

रोगके बन्द करने का उपाय ॥

इस रोगकी रुकावट रोग के होजाने पर इलाज करने की अपेक्षा रोगके होनेसे पहले अति सुगमतासे होसक्ती है और जो पशुकी भली भांति रखवाली की जाय कि वह ऊपर लिखे हुये कारणों से बचा रहे अर्थात् रोग के होनेके कारण नहीं तो वह कम तर इस रोगमें फसेंगे, यह रोग भेड़ों कोभी होजाता है इनको चिकित्सा भी वही है जो मवेशी के लिये लिखीगई है परन्तु भेड़ों को मवेशी से कम औषधि देनी चाहिये और उनके लिये इस पुस्तक में उत्तम २ औषधियां अन्त में लिखी हैं ॥

पांचवां अध्याय ॥

गलेकी पीड़ा और उसके सूफ़जाने के वर्णन में ।

रोगका वर्णन और उसके होनेका कारण ॥

यह रोग बड़ा घातक और संसर्गी होता है और विषैले रुधिर से पैदा होता है इसका दृत्तान्त यह है कि जीभ और मुखके अन्तिम भाग में और गले के चारों ओर नरखरे आदि में सूजन होजाती है और जीभ और गले के आर पास रुधिर मिलाहुआ पानी बहता है और उसके साथ प्रचण्ड ज्वर और वस्तु निगलने में पीड़ा और सांस टूटने लगती है इस रोग में भी दूषित चिह्न उतनेही समय के पीछे प्रकट होते हैं जितने समय के पीछे खून फ़साद के ज्वर के प्रकार में प्रकट होते हैं ॥

ज्वर गले में सूजन और कानों के नीचेके भाग में और जबड़ों में लार का बहना जीभ और मुखके प्रान्त में सूजन का होना, निगलने और सांस लेने में पीड़ा का होना, खांसी का आना, नयनों और पपोटों की झिल्ली का कलौंच लिये लाल होजाना इन सब अङ्गों में सूजन अत्यन्त शीघ्र बढ़ती जाती है और जानवर को निगलने और सांसलेने में अधिक पीड़ा होती जाती है और सांसलेने के समय उसकी नाक से खरखराहट का शब्द कईगज़ के अन्तर पर सुनाई देता है सांस से दुर्गन्ध आने लगती है और जीभ मुखसे बाहर निकल आती है और काली होजाती है और उसमें छिद्र पड़ जाता है और कहीं कहीं से पीप बहती है और जीभके किसी २ स्थान पर लाल लाल चट्टे दिखाई देते हैं, सांस लेने में तुरन्त पीड़ा बढ़ती जाती है और थोड़े से समय में जानवर दमघुट कर मरजाता है॥

रोगके उपचिह्न॥

यह रोग एक वा दो घण्टे से दो वा तीन दिन तक रहता है और जोपशु इसमें फसजाते हैं उन में सौ१०० मेंसे अनुमान ८० के मरजाते हैं॥

रोगकी अवधि॥

यह रोग इतना शीघ्र बढ़ता है कि उपाय करने में विलम्ब थोड़ा भी न करना चाहिये मुख्य कर कण्ठ का उपाय करना चाहिये जो पहलेही दर्जे में यह रोग जानाजाय और जानवर के किसी वस्तु के निगलने में कठिनता न पड़ती हो तो औषधि नम्बर ५ वा ३ के अनुसार कड़ा जुल्लाब देना चाहिये कि गले की सूजन इतनी न बढ़ने पावे कि गला बन्द होजाय और जानवर का दम घुट जाय गले के आस पास एक कान की जड़से दूसरे कान की जड़तक लोहा ख़ूब गरम करके तीनवा चारबेर दाग़ दें और गटई के ऊपर के भाग में भी दो तीन इञ्च तक दाग़ दें और जबड़ों के

रोग का उपाय॥

नीचे और उनके बीच में और फिर सम्पूर्ण गले भरमें एक कानकी जड़से दूसरे कानकी जड़तक दोतीन बेर गरम लोहेसे दाग़दें और औषधि नम्बर ५१ वा ५२ के अनुसार ब्लस्टर अर्थात् फफोला डालने वाली औषधि खूब मलदें जो इसदवा का गुण दीख पड़े और फफोले पड़ने लगें तो इस चिह्नसे आरोग्य होजाने के लक्षण समझने चाहिये— जानवर का मुख औषधि नम्बर ३५ के अनुसार बहुधा धोडालना चाहिये औषधि नम्बर ६२ की रीति पर आध आध घण्टे के पीछे अमल अर्थात् पिचकारी भी देना चाहिये—पतले २ माड़ में थोड़ासा नमक मिला कर पशु को देना चाहिये और उसके साथ नम्बर ४३ की लिखी हुई बलकारी औषधि भी मिला देना चाहिये औषधि इस प्रकार से दीजाय कि पशु का दम न घुटजाय क्योंकि सूझन के कारण निगलने में उसे बड़ा दुःख होता है—और कभी २ गन्धक वा राल की धूनी से पशु को बड़ा आराम होता है (औषधि नम्बर ५७ देखो) जब दम रुक जाने के कारण मृत्यु का भय होता है तो पशु के इलाज करने वाला शालिहोत्री गटई में चीरा देदेता है जिससे उस चीरे में से सांस आवे जावे और किसी २ समय इस उपाय से पशु के प्राण बच जाते हैं—जो गले के आसपास अधिकता से सूझन होजाय तो गले के नीचले भाग में तेज़ चाकू से दो तीन जगह चीरा दे देना चाहिये और ज़खमों में औषधि नम्बर ४९ का लिखा हुआ मरहम लगाना चाहिये ॥

———

छठवां अध्याय ॥

उन संसर्गीरोगों के वर्णन में जो हिन्दुस्तान में बहुधा पशुओं और भेड़ों को होजाता है।

जो उपाय और चिकित्सा इस अध्याय में लिखी हैं रोग

के प्रकट होजाने पर उनको करना चाहिये जो सांसर्गिक रोग बड़े भारी हैं वे ये हैं ॥

१—रेण्डरपैस्ट अर्थात् सीतला वा माता ॥

२—[ब्लैकक्वार्टर] [ग्लासएन्थराक्स] [स्प्लिङ्गएम्लूसैक्सी] (प्राक्सी) ये सब एन्थराक्स फीवर अर्थात् रुधिर विकार के ज्वर के प्रकार सेहैं ॥

३—मुख और पैरके रोग ॥

४—प्लूरोन्यू मोनिया अर्थात् फ़ाबुरीआ, जिसमें फेफड़े पर सूजन होजाती है ॥

ये रोगहिन्दुस्तानके बहुधा सूबोंमें पशुओं के होते हैं और इनके नाम प्रत्येक सूबेमें पृथक् २ हैं इनके वृत्तान्त भी भिन्न२ हैं और इनके दर्जे भी विपरीत होते हैं, रेण्डरपैस्ट रोग सबसे शीघ्र लगजाताहै और बड़ा प्राणघातक रोग है सौ मेंसे पचास नव्वे तक पशु इसरोग से मरजाते हैं और यह दो दिनसे ले पन्द्रह दिन तक रहता है [एन्थराक्स फीवर] अर्थात् रुधिर विकारका ज्वर कई प्रकार का मवेशी और भेड़ों को होता है, इंगलिस्तान के शालिहोत्रियों की समझ में यह रोग ठण्डे देशोंमें उड़कर नहीं लगजाते हैं परन्तु उष्ण देशोमें अवश्य उड़कर लग जाते हैं, इस रोग के सब भेद अत्यन्त घातक होते हैं और इनसे जानवर बहुत कम आरोग्य होनेपाते हैं, यह ज्वर हिन्दुस्तानमें भेड़ोंको बहुत कम होता है परन्तु गाय, बैल, भैंस आदि इस रोग में फसजाते हैं और उन्हें दो घण्टे से ३० घण्टे तक रहता है ॥

[मुख और पांव]का रोग भी अति शीघ्र होजाता है परन्तु इससे पशु बहुत कममरते हैं,जोचिकित्सा भले प्रकार की जाय तो सौमेंसे दो वा तीनसे अधिक पशु न मरेंगे ॥

[प्लूरोन्यूमोनिया] अर्थात् फ़ाबुरीआ जो फेफड़े को सुजा देता है यह भी रोग बहुत शीघ्र होजाता है परन्तु

पछतावे की बात है कि हिन्दुस्तान के पशु पालक लोग इस रोग की प्रकृति से जानकार नहीं हैं कि यह रोग धीरे धीरे बढ़ता जाता है और पशु भीतर ही भीतर घुलता जाता है और बहुधा दो दो तीन तीन महीने जीता है कभी२इससेभी अधिक समय तक जीता रहता है॥

[रेण्डरपेस्ट] और [ब्लैक क्वार्टर] और और २ प्रकार के रुधिर विकार के ज्वर और [मुख और पांव के रोग] हिन्दुस्तान के सब सूबों में होते हैं॥

[प्लूरोन्यूमोनिया] बहुधा पश्चिमोत्तर देश और पञ्जाब और सिन्ध और बम्बई के किसी २ जिलओं में पशुओं के होता है परन्तु और देशों में कम सुनने में आया है॥

यह स्मरण रखना चाहिये कि यह रोग केवल एक जात के ही पशुओं के पास इकट्ठे रहने से नहीं होता परन्तु जो मनुष्य रोगी पशुके पाससे आरोग्य पशुके निकट जाय उसके द्वारा सेभी यह रोग आरोग्य जानवर को होजाता है, और जो चारा वा पानी रोगी पशुके पास रक्खा हो उसकेद्वारा भी आरोग्य पशुको हो जाता है रोगी पशुओं के थान में भी यह रोग समाजाते हैं, मुख्य करके जो जानवर [रेण्डरपेस्ट] रोगमें फस गया हो उसकी आंखों के चीपड़ और मुखकी लार और लैंट और कफ़से यह रोग फैलता है और जो जानवर [मुख और पांवके] रोग में फसाहो उसके पांव और मुखके मवाद से यह रोग फैलता है जितने जानवर जुगाली करते हैं चाहें जङ्गली वा पालू होवें सब [रेण्डरपेस्ट] रोगमें फसजाते हैं भेड़ोंको भी यह रोग होजाता है परन्तु बहुत न्यूनता अर्थात् कमी के साथ होता है और यह स्मरण रहे कि बहुधा रोगी भेड़ोंके द्वारा सींग वाले आरोग्य पशुओं में फैल जाता है॥

[रेण्डरपेस्ट] और [प्लूरोन्यूमोनिया] मनुष्योंके नहीं

होता परन्तु परीक्षा से विदित हुआ है कि कभी २ [एन्थराक्स फीवर] मनुष्योंको भी होजाता है और उसके शरीर में फफोले होजाते हैं इसलिये जो लोग ऐसे जानवरोंकी लाशें चीरकर देखें जो[एन्थराक्सफीवर]से मरगये हों उन्हें उसका ध्यान रखना चाहिये कि उनके हाथ छिलकर उनमें विकार का मवाद न लगजाय, क्योंकि लिखा है कि कोई २ मनुष्यों ने ऐसी गौ का दूध पिया है जो [मुख और पांव] के रोग में फस रही थी और दूध के दोष से उनके मुखमें फफोले पड़ गये थे, जो कि बहुधा यह(रेण्डरपैस्ट) रोग न्यूनवा अधिक हिन्दुस्तान के प्रत्येक भाग में सदैव बना रहता है वा जो कहीं नहीं भी होते तो उत्पन्न होजाने की आशा है इसलिये पहिले से उनकी रोकका उपाय करना चाहिये वे किसी पशु समूह में न पहुंचने पावें,जिन लोगों के प्रबन्ध में गाय, बैल, भैंस आदि पशु और भेड़ हों उन्हें नीचे लिखे हुई रीतों पर भली भांति ध्यान रखना चाहिये ॥

प्रथम—जो पशु वा भेड़ें मेले मेंसे मोल ली जांय उन्हें ऐसा समझना चाहिये वह मेले में से रोग को ले आई हैं क्योंकि जानवर और भेड़ें चारों ओर के देशों से मेलेमें बिकने को आती हैं और इस बात का अवश्य सन्देह होता है कि किसी ओर [रेण्डरपैस्टरोग] और किसी ओर (मुख औरपांवकेरोग)वा और २ संसर्गी रोग फैलेहोंगे ॥

दूसरी—जब गाय, बैल, भैंस आदि और भेड़ों को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जांय तो मार्गमें उन्हें और मवेशी वा भेड़ोंके साथ न मिलने दें और रात्रि को किसी सराय के भीतर वा उसके पास भी न रक्खें क्योंकि प्रायः सरायों में रोगी पशुओं को बांध देते हैं जिनसे वहां की वायु बिकार भरी होजाती है, उष्णकाल में इस बात का अत्यन्त ध्यान रहे कि मवेशी वा भेड़ों को ठण्डे समय

मुसाफ़िरी में चलाया करें और चौबीस घण्टे के बीच में पांच छः कोस से अधिक उन्हें न ले जावें और पानी और दाना अच्छी तरह दिया करें ॥

तीसरी—जब मवेशी वा भेड़ों को मेले में से वा किसी स्थान से मोल लेवें तो मोल लेने वाला उनको अपने घर लाकर चराने वा पानी पिलाने के समय वा और किसी समय प्राचीन पशुओं के साथ न रक्खे बरन उन्हें एक वा डेढ़ महीने तक पृथक् स्थान में रक्खे जिससे यह दृढ़ होजावे कि यह जानवर किसी संसर्गी रोग में फसा हुआ है वा नहीं (२० वा २१ वीं रीति देखो) उस समय में नवीन मोल लिये हुये पशुओं को प्रातःकाल और सायङ्काल के समय अच्छे ध्यान करके देखा करें और जो ऊपर कहे हुये रोगों में से कोई रोग उनमें पाया जावे तो उनको आरोग्य पशुओं के पास से तुरन्त जुदे स्थान में करलें और कुछ अन्तर पर बांधें, यदि एक वा डेढ़ महीने तक कोई रोग उनमें न पाया जावे तो फिर उन्हें आरोग्य जानवरों के साथ चराने और बांधने में कुछ सन्देह नहीं है ॥

चौथी रीति—जब चौपायों को एक ज़िलअ से दूसरे ज़िलअ में लेजाते हैं तो वे बहुधा सांसर्गिक रोगों में फस जाते हैं इसलिये जब घरपर लावें तो उन्हें भली विधि देखलें और जो उन्हें ऐसे ज़िलअ से लाये हों जहां ये रोग फैल रहे हों तो कुछ समय तक उन्हें पृथक् रक्खें (२० वा २१वीं रीति देखो) ॥

पांचवीं रीति—जब संसर्गी रोगों मेंसे कोई रोग मवेशी वा भेड़ को होजाय वा जो संसर्गी रोग नहीं होतो उसके मध्ये संसर्गी रोग होने का सन्देह हो तो उचित है कि रोगी जानवरों को आरोग्य जानवरों से जुदा करलें ॥

छठवीं रीति—पशुओं को बड़ी देर तक ध्यान से देख

कर जिनसे रोग के उपचिह्न के रूपक प्रकट हों उन्हें शफ़ाखाने में लेजांय ॥

सातवीं रीति—आरोग्य पशुओं के छोटे २ समूह बना लिये जावें और प्रत्येक समूह में इतने जानवर रक्खे जांय जितनी थोड़ीसी जगह में आ सकें और प्रत्येक समूह को दूसरे समूह से बहुत अन्तर पर रक्खें और ऐसी रीति पर बांधे कि जिधर से रोगी पशु की ओर से उनकी ओर वायु न आने पावे और प्रत्येक समूह को बारम्बार देखें और जानवर थोड़ा भी बीमार पड़े उसे तुरन्त वहां से हटालें—यदि यह उपाय बराबर किये जांय तो थोड़ेही दिनों में जानपड़ेगा कि केवल एक वा दो समूह में रोग रहगया है और जो जानवर बीमार हो उसे तुरन्त चिकित्सालय अर्थात् शफ़ाख़ाने में उठा लेजांय तो रोग सब समूह भर में फैलने न पावेगा॥

आठवीं रीति—जिस चिकित्सालय में रोगी पशु रक्खे जांय उसके चारों ओर एक उत्तम हाता बनादिया जाय और उसमें कोई आवे जावे नहीं और नौकर और रोगी पशु उस हातेके बाहर जाने न पावें और खाना और चारा उन नौकरों और रोगी पशुओं को वहीं पहुंचा दिया करें और चारा वा पानी वा मैला कूड़ा करकट वा कपड़ा वा और कोई वस्तु उस शफ़ाख़ाने से बाहर न लेजांय और कुत्तों को भी वहां आने जाने न दें क्योंकि उनके द्वारा रोग उन स्थानों में भी पहुंच जायगा जहां आरोग्य पशु रहते होंगे ॥

नवीं रीति—जो कुछ कूड़ा करकट वा गोबर मूत्र में भरी मट्टी आदि शफ़ाख़ाने में से निकले उसी शफ़ाख़ाने के भीतर जला दी जाय और गीला गोबर और दस्त आदि कई बार थान से उठालिये जावें और शफ़ाख़ाने में कहीं दूर गढ़ा खोद कर उसमें गाड़ दें—गढ़ा छः फ़ीटसे

अधिक खोदाजाय और उसमें दो फ़ीट तक चूना और अच्छी ताज़ी मट्टी भरदें ॥

दसवीं रीति—शफ़ाख़ाने की दीवारें और थान और धरती को कई बेर अच्छी तरह झाड़ और धोकर ख़ूब साफ़ करडालें और प्रति समय साफ़ करके श्रीयुत मिस्टर मेगडागल साहब की सफ़ा करनेकी औषधि वा संसर्गी रोग के दूर होजाने की और कोई औषधि वा चूना वा राख वा सूखी मट्टी बहुतसी भूमि में बिछादें और लकड़ी के दरवाज़े आदि और दीवारें पहिले धोडाली जांय इसके पीछे उनपर सफ़ेदी फेरदी जावे ॥

ग्यारहवीं रीति—शफ़ाख़ाना ख़ूब हवादार हो और उसके भीतर एक वा दो घण्टे गन्धक की धूनी दीजाय और जब धूनी दीजाय तब दरवाज़े और खिड़कियां बन्द करदी जांय, परन्तु झरोखे थोड़े २ खोल दिये जांय ॥

बारहवीं रीति—जिन ऋतुओं में मक्खियां अधिकता से होती हैं और वे पशुओं को सताती हैं उनके नाश करने का यह उत्तम उपाय है कि जो मैला और कूड़ा करकट शफ़ाख़ाने में से निकले उसे उसीस्थान के दरवाज़े के सन्मुख हवाकी ओर जलाया करें ॥

तेरहवीं रीति—रोगी जानवर ख़ूबसाफ़ रक्खे जांय और चावल का पतला २ मांड और हरी २ घास उन्हें दी जाय, आरोग्य चौपायों को भी नरम और पचनेवाला चारा देना चाहिये क्योंकि जिन चौपायों को कड़ा और सूखा चारा दिया जाता है उनको महारोग होता है उन चौपायों से जिन्हें नरम और पाचक भूसा चारा दिया जाता है ॥

चौदहवीं रीति—जब चौपाये वा भेड़ें सांसर्गिक रोग में फसजांय तो उन्हें आरोग्य पशुओं के साथ चराना वा

बांधना न चाहिये और एक वा डेढ़ महीने तक जुदा रखना चाहिये (२० वा २१ वीं रीति देखो)॥

पन्द्रहवींरीति—जो पशुचङ्गे होजांय उन्हें चिकित्सालय में लेजाने के पूर्व साबून और पानी से खूब धोवें और जो [कारबोलिक एसिड]मिलजाय तो एक ग्लास उसका एक गैलन गरम पानी के साथ अर्थात् १ छटांक [कार बोलिक एसिड]दो सेर पानीमें मिलाकर स्नान करावें॥

सोलहवीं रीति—जो जानवर[रेण्डरपैस्टरोग]वा[ब्लैक-क्वार्टर] वा [एन्थराक्सफ़ीवर] के किसी प्रकार से वा [मुख पांव के रोग से] वा [फेफड़े के रोग से]मरजांय उन की लोथकमसे कम चारफ़ीटजमीनके नीचे गाड़दीजांय॥

सत्रहवींरीति—जो जानवर सांसर्गिक रोगसे मरजांय उनकी खाल खूब छील कर और चाक़ू से चाक करके लाशों के साथ गाड़ दें वा नमक और चूने आदि से लगा कर खाल को साफ़ करलें कि उसमें सांसर्गिक दोष का अंश शेष न रहे॥

अठारहवीं रीति—जिस स्थान वा जिस भूमि पर ऐसे पशु बंधे हों जिनको संसर्गी रोग होरहा हो वहां की की मट्टी ऊपर से खोदकर और कहीं गाड़दें और नीचे मिट्टीको खूब खोद कर तले ऊपर कर दें और भूमि पर नवीन मट्टी विछादें, जो धरती में ईंट वा पत्थर विछे हों तो उसे छील कर धुलवा डालें और चूना वा [कार बोलिकएसिड] मलदें जिससे उसस्थान से विकार का अंश जाता रहे॥

उन्नीसवीं रीति—जिन पशुओं के सांसर्गिक रोग हुआ हो उनके गाड़ी के जूए और ज़ीन और साज़ आदि खूब धोकर उनमें से सांसर्गिक दोष का विकार निकाल दिया जाय और गद्दे का पुराना अस्तर और गूदड़ आदि दूर करके जला दिया जाय॥

बीसवीं रीति—जब [रिण्डर पेस्ट रोग] और [लै काका-
टर] और और प्रकार के [एन्थराक्स फ़ीवर] और [मुख
और पांवके रोग] पशुओं के होते हैं तो २८ दिन केभीतर
उसके चिह्न प्रकट होते हैं इसलिये जिन जानवरों पर
यह सन्देह होकि इनपर सांसर्ग्गिक रोग का असरपहुंचा
है उन्हें एक महीने तक पृथक् रखना चाहिये ॥

(१) इक्कीसवीं रीति—[प्लूरोन्यूमूनिया] अर्थात् रुधिर
विकार के ज्वर के रूपक और उपचिह्न दो सप्ताह से छः
सप्ताह तक प्रकट होते हैं परन्तु बहुधा ४० दिन के भीतर
इस रोग के उपचिह्न प्रकट हो जाते हैं सो जब जानवर
इस रोग में फसजाय तो उसे ४५ दिन तक पृथक् रखना
चाहिये॥

———

सातवां अध्याय ॥

गला बन्द होजाने के वर्णन में ।

इसका अर्थ यहहै कि कोई वस्तु कठिनता से निगली
जाय वा बिलकुल न निगली जाय ॥

---

(१) शिक्षा—गौ बैल और भैंस भैंसों और भेड़ों को जो खुजली निकल
आती है तो यह भी सांसर्ग्गिक रोगों मेंसे है यद्यपि इससे मरते नहीं हैं
तो भी जब ये रोग किसी पशु समूह में फैले तो रोगी पशुको आरोग्य
पशु से पृथक् करलेना चाहिये और उनका इलाज करना चाहिये जिससे
यह रोग फैलने न पावे और रोगी पशु अच्छे हो जावें क्योंकि जो चौपाय
वा भेड़ों को खुजली निकल आती है वह कभी पुष्ट नहीं होते हैं जो
कमिश्नर साहब पशुओं के रोगों की तलाश वा निश्चय करने के लिये नियत
हुये थे वे यह कहते हैं कि हमने हिन्दुस्तान की भेड़ों को चेचक निकल
ते नहीं देखा परन्तु यह रोग भी शीघ्र उड़ कर लगजाता है, यूरोप में
सैकड़े पीछे २० से नव्वे जानवर तक चेचक से मरजाते हैं ॥

यह दशा इस कारण से होजाती है कि कोई बड़ी कड़ी वस्तु जैसा गन्नेका टुकड़ा गले के नीचे के भाग में वा उस नले में जिसके मार्ग्ग से खाना जानवर के आमाशय में जाताहै फंसजाता है कभी कभी चमड़े के टुकड़े, लोहा, कीलें, तीक्ष्ण सींग, कड़ी लकड़ी के तेजटुकड़े ये वस्तु जानवर खाजाता है और वे गले में फंस जाती हैं और जो यह चीजें बहुत कड़ी और तेज और बाड़दार होती हैं तो नरखरे की झिल्ली को काट डालती हैं॥

कारण॥

जो मुख के प्रान्तभाग में कोई ऐसी वस्तु फसजाती है तो जानवर खांसने लगता है और लार भी बहती है और जब पानी पीता है तो नथनों से बह जाता है और जो गले के नलमें कोई वस्तु फसजाती है तो जानवर दो वा तीन वेर निगलताहै यहां तक कि जिस स्थान पर वह चीज अटकी है वहां तक पानी भर जाताहै उसके पीछे मुख और नथनों के मार्ग्ग होकर बह जाता है, ऐसे समय में जानवर बहुत बेचैन होता है और उसके चहरे से पीड़ा होने के रूपक प्रकट होते हैं और गरदन के पट्ठों में ऐठन होती है और उस ऐठन का कारण यह होता है कि पशु चाहता है कि जो वस्तु गले में अटकी हुई है या तो वह पेट में उतर जाय वा मुखसे बाहर निकल आवे इस कारण से गरदन की रगें खिचती दीख पड़ती हैं, थोड़ेही समय में जानवर का आमाशय फूलता दीख पड़ता है और जो शीघ्र उपाय नकिया जाय तो आमाशय के बाईं ओर सूजन होजाती है जो गलेमें कोई वस्तु अटकी है तो गले के भीतर हाथ डालने से जान पड़ेगी, जो गले और छातीके बीच में कोई वस्तु अटकी होय तो गले को हाथ से खूब टटोलने से जान पड़ेगी और जिस स्थान पर वह चीज अटकी होगी

उपचिह्न॥

वह स्थान फूला हुआ मालूम होगा, यदि कोई वस्तु गले के नलके उसभाग में अटकीहो जो छातीके भीतर है पर मुख के अन्त भाग वा गलेके किसी भागमें जो वह चीज़ न दीखपड़े तो यह निश्चय होगा कि वह छातीके भीतर फसी है और जब जानवर पानी पीवेगा तो जान पड़ेगी कि पानी बिन रुकाव के गले से उतरता चलाजाता है परन्तु जब दो तीन घूंट पी चुकेगा तो कण्ठके नीचले भाग में पानी क्रम २ से भर जायगा यहां तक कि जब उस स्थान तक खूब भर जायगा जहां पर गला और पानी जाने के मार्ग मिल गये हैं तो जानवर उलटी करदेगा॥

उपाय॥ गरम गरम अलसी का तेल पाव भरमें ताड़ी ५ तोले मिलाकर ठहर ठहर के पिलावें इस औषधि से गला और जमाहुआ चारा वा और कोई वस्तु जो गले में अटकी होगी चिकनी होजायगी और गले में उगलने और उस वस्तु को निकाल कर फेंकदेने की सामर्थ्य आजावेगी यद्यपि औषधि एक वा कई बेर उलटी करने से निकल जाय तो भी लगातार थोड़ी २ करके दीजाय, जो कोई वस्तु गलेके अन्त भागमें अटकी होतो उसे हाथ से निकाल डालना चाहिये, जो गले के आदि में अटकी होतो अलसीका तेल और ताड़ी पिलाकर गले के ऊपर जो सूझन दीखे उसे अंगुलियों से खूब दबावें और जब वह चीज़ थोड़ी भी अपने स्थान से हट जाय तो थोड़ा सा तेल और ताड़ी फिर दें और फिर उस सूझन को ज़ोर से दबावें इस प्रकार लगातार करने से जो वस्तु गले में अटकी होगी वह आगे को खिसक आवेगी और जानवर अच्छा होजायगा, और जो किसी चिह्न से जान पड़े कि कोई वस्तु गले के उस भाग में अटकी है जो छाती के भीतर है, यद्यपि अलसी का तेल और ताड़ी दिये गये हों परन्तु वह वस्तु न निकले तो वह गहरा

नल जिसका वर्णन आठवें अध्याय में लिखा है मुखके भीतर डाल कर गले में उस स्थान तक लेजांय जहां पर वह वस्तु अटकी है और उसे थोड़ा दबावें तो वह वस्तु आमाशय में उतर जायगी, और जो ऐसा नल न मिल सके तो एक अङ्गुल भर मोटा बेंत लें और रुई की नरम गेंद अण्डे के बराबर बनाकर और उसके ऊपर कपड़ा लपेट कर उस बेंत के एक सिरेमें बांध दें और उसे तेल में खूब डुबोकर मुखमें डालकर गले में ले जांय और जो वस्तु अटकी हुई है उसे ठेलें तो वह नीचे उतर जायगी, जब यह उपाय किया जाय तब एक मनुष्य पशु का मुख चीरे रहे, कभी २ ऐसा भी होता है कि जानवर का गला उस वस्तु से जो उसमें अटकी हुई है छिल जाता है वा जो मनुष्य उसके गले में नल डालता है वह बहुत ज़ोर से नल को दबाता है वा गेंद उस बेंत के सिरे में अच्छी तरह नहीं बांधी गई है इन कारणों से गले में सदैविक घाव पड़जाता है और दूसरी बेर गला रुकजाता है, जब जानवर का गला बन्द होजाता है तो उसके जिस भाग में वस्तु अटकी हुई होती है वह कुछ दिनों तक निर्ब्बल रहता है इसलिये तीन वा चार दिन तक नरम भोजन जैसा मांड़ वा सानी, इसके पीछे ताजी २ घास देना चाहिये जब गला बन्द होने से जानवर के कण्ठ गत प्राण होजाते हैं तब डाक्टर गले को चाक़ू से चीरकर वह चीज़ निकाल लेते हैं ॥

आठवां अध्याय ॥

प्रथम आमाशय के फूलजाने के वर्णन में ॥

इस रोग में पहिले आमाशय एक प्रकार की वायु से जिसे ग़ैस कहते हैं फूलजाता है ॥

रोग का वर्णन ॥

यह रोग बहुधा चौपायों को भोजन के विपर्य्यय से होता है अर्थात् जिस चारे के खाने की पशु को प्रथम से आदत नहो उसके खाने से मांदा पड़ जाता है, जब पहली वर्षा पड़ जाती है तो रसदार घास निकल आती है और जो पशु बहुत दिनों तक भूखे मरा किये हों वे भूख के मारे अधिक घास खाजाते और पेट फूलकर मांदे पड़जाते हैं प्रत्येक समूह में बहुत से पशु इस प्रकार से मांदे हो जाते हैं और यह रोग हैर्ज के सदृश पशुओं में फैल जाता है ॥

रोग होने का कारण ॥

किसी किसी समय आमाशय के फूलजाने से गले के बन्द होजाने के रूपक दिखाई देते हैं [अध्याय ७वां देखो] इस रोग के उपचिह्न बहुत शीघ्र प्रकट होते हैं, प्रथम पेट की बाईं ओर फूलन होती है और जब उस फूलन को अंगुली से बजाते हैं तो जानपड़ता है कि इसका कारण यह था कि पहिले आमाशय में हवा भर गई थी, जानवर को सांस लेने में पीड़ा बहुत होती है और सिरको आगे की ओर डाले रहता है और कराहा करता है और सब प्रकार से अकड़ा रहता है और जानपड़ता है कि हिल चल नहीं सक्ता, आमाशय में फूलन बहुत बढ़जाती है बड़े भारी असाध्य के लक्षण होजाते हैं, जब जानवर लेटता है तो सांस लेना और भी कठिन होजाता है और तुरन्त उठखड़ा होता है—जो हवा आमाशय में इकट्ठी होजाती है जो शीघ्र वह नहीं निकाल दी जाती तो प्रति मिनट श्वास के लेने में पीड़ा यहां तक बढ़ती जाती है कि पेट इतना फूल जाता है कि उस जानवर से खड़ा नहीं हुआजाता और वह गिरपड़ता है और श्वास रुककर मरजाता है, बहुधा लोग इस रोग को धोके से और रोग समझने

रोगका निदान ॥

लगते हैं और जो यह रोग बहुत शीघ्र बढ़जाताहै इस लिये कोई २ इसे विष का दोष समझते हैं—जो यह रोग बहुत प्रबल होता है तो एक घण्टे से दो घण्टे तक रहता है और बहुत बढ़ जाताहै तो आठसे बारह घण्टे तक जानवर जीता रहता है ॥

चिकित्सा ॥

१४ वीं औषधि के अनुसार अति शीघ्र जुल्लाब देना चाहिये जो इस औषधि ने कुछ गुणकिया तो जानवर तुरन्त डकारें लेने लगेगा और ज्यों २ डकारें आवेंगी त्यों २ सूजन घटती जायगी, और सांस लेनेमें पीड़ा कम होती जायगी और जो इस औषधिसे कुछ गुण नहुआ और सांस रुकजानेका सन्देह हो तो एक मनुष्य पशु का मुख चीरे रहे और दूसरा मनुष्य एक दरारदार नरमनल जिसकी लम्बाई अनुमान छः फुटके हो मुखमें डालकर गले के मार्ग्ग से आमाशय तक लेजाय जिससे आमाशय के फुलानेवाली विकार भरी हुई वायु उस नलके मार्ग्ग से निकल जाय ॥

दूसरा उपाय यह है कि पशु का पेट चीर कर वह वायु जिससे वह फूल गया है निकाल डालें और पेट को इस प्रकारसे चीरें कि बायें पहलूके ऊपर अन्तकी पसली और कूले की हड्डी के बीचमें अति तीक्ष्ण चाकू से ऊपर की खाल काट कर आमाशय तक चीर डाला जाय और इतना बड़ा चीराकरें कि जिसमें छोटी अङ्गुलीके बराबर मोटा दरारदार बांसका छः इञ्च लम्बा टुकड़ा समा जाय जब वह बांस का टुकड़ा उस चीरे में से आमाशय में पहुंच जायगा तो विकार भरी वायु उस नल के मार्ग्ग से शीघ्र निकल जायगी और पशु तुरन्त अच्छा होजायगा— यह बांस का टुकड़ा एक वा डेढ़ घण्टे तक चीरे के भीतर रखना चाहिये जब तक सूजन सब न उतर जाय एक लकड़ी तीन इञ्च लम्बी उस बांस के सिरे में बांध दीजाय

जिससे वह बांस आमाशय के भीतर न चलाजाय—इसके पीछे पशु को जुल्लाब दियाजाय (औषधि ३ वा ५ देखो) पशु को थोड़ीसी हरी घास खाने को दीजाय परन्तु बहुत चारा कदापि न दिया जाय जब समूह में से एक जानवर भी इस रोग में फंसजाय तो और जानवर भी अधिक खाने न पावें ॥

नवां अध्याय ॥

प्रथम आमाशय के फैलजाने और खाने से फूलजाने के वर्णन में ॥

रोग का वर्णन ॥

प्रथम आमाशय मोटी और कड़ी अपाचक वस्तु के खाने के कारण जैसा बहुत पक्की घास वा सेंठे खाने से फैल जाता है और किसी २ समय इस रोग के होने का यह भी कारण होता है कि जानवर बहुत दिनों से भूखा था अब जो उसे उत्तम चारा दिया तो वह भूख के मारे बहुत सा खागया और पेट फूल गया, कभी यह कारण भी होता है कि बहुत सा दाना एक ही बेर खाजाता है इससे भी पेट फूल जाता है—और कभी कभी इस रोग का यह भी कारण होता है कि जानवर को उसके प्रमाण के समान पानी नहीं मिलता है ॥

रोग होने का कारण ॥

जब आमाशय भोजन से अधिक भरजाता है तो उसकी पाचन शक्ति कम होजाती है अर्थात् मन्दाग्नि होजाती है और जो कि उसके ऊपर पट्ठा वा खाल वा चमड़ा गरिष्टखाना खाने से सदैव दबा और फैला रहता है और बिलकुल निर्ब्बल और सुन होजाता है इस हेतु से आमाशय की पाचनशक्ति जाती रहती है ॥

इस रोग को धोखे से पेटका फूलना समझते हैं पेट फूलने के यह अर्थ हैं कि आमाशय एक

रोगके उपचिह्न ॥

प्रकार की वायु अर्थात् गैस से फूलजाता है, परन्तु इस रोग के उपचिह्न पेट फूल जाने की अपेक्षा धीरे २ प्रकट होते हैं, प्रथम जानवर सुस्त होजाता है और जुगाली नहीं करता बाईं कोख में धीरे धीरे सूजन चढ़ आती है और जब उसे अंगुली से बजाते हैं वा दबाते हैं तो जैसे पेट फूलनेके रोग में नक्कारे के समान बजता है उस भांति इस रोग में नहीं बजता बरन खा-ना भरजाने के कारण कड़ा होजाता है और जो अंगुली रखके अधिक दबाते हैं तो अंगुली इस प्रकार से धसजाती है मानो नरम मिट्टी को दबाया, जानवर को बद्ध कोष्ठ रहता है और एक वा दो घण्टे के समय में रोग का दोष अधिक बढ़जाताहै ॥ जानवर नाक आगेको निकाले रहता है जिससे सुख पूर्वक श्वास लेसके और श्वास बहुत शीघ्र लेने और खर खर करने लगता है और जब लेटता है तो दहनी करवट से परन्तु फिर थोड़ी देर में उठखड़ा होता है क्योंकि लेटने से उसे सांस लेने में दुःख होता है इस कारण वह बहुधा खड़ाही रहता है और सांस लेने में ऐसा दुःख होता है कि जब सांस लेता है तो कराहता है और दांत किट किटाता है, जब खाने की अधिकाई से आमाशय अधिक फैल जाता है तो बहुत सुस्त और कमज़ोर होजाता है और सांस के आने जानेमें बड़ी पीड़ा होने लगती है और जानवर गिर पड़ता और सांस घुट कर मरजाता है ॥

रोगकी अवधि ॥

यह रोग एक घण्टे से ३ घण्टे तकरहताहै ॥

इस रोग के उपाय में इसबात का ध्यान रखना चाहिये कि आमाशय में इतनी सामर्थ्य होजाय

चिकित्सा ॥

कि पहला खाना जो इकट्ठा होगया है वो

पचा सके एक भारी जुल्लाब शीघ्र दियाजाय जैसा [औषधि नम्बर ६ में लिखाहै] और यह जुल्लाब दो वा तीन सेर उष्णो दकमें दिया जाय, उष्णोदक में साबून को इस प्रकार घोल दें कि उसमेंझाग उठआवें और पानीकेसाथ खूब मिलजाय उसमेंतेल मिलाकर उसकी पिचकारी पन्द्रह २ मिनटके अन्तर से दी जावे [औषधि ६२ देखो] पेट अर्थात् मुख्य कर बाईं कोख को हाथसे खूब मलो फिर [औषधि नंबर ५५]के अनुसार आमाशयमें बफ़ारा दो, और भी औषधि नंबर ४१ के अनुसार नरम और बलिष्ठ औषधि दो वा चार तोले अलसी के तेल के साथ तीन २ चार २ घण्टे के पीछे दें जो पन्द्रह वा बीस घण्टे में आमाशय ढीला न पड़जाय तो औषधि १ वा ३ के अनुसार एक जुल्लाब और दें और पिचकारी भी दी जावें, जो पशु अत्यन्त सुस्त होजाय और मूर्छा होने के रूपक दीख पड़ें तो जैसी औषधि ४१ नंबर में लिखी है वैसी बलिष्ठ औ-षधि अच्छीतरह दें और पशु से जितना पिया जाय उतना गुनगुना पानी वा अलसीका पतला २ मांड पिलावें, जब दस्तों का प्रारंभ होजायगा तो रोग के उपचिन्ह भी घटने लगेंगे परन्तु कई दिन तक खाने को केवल अलसी का मांड और भूसेकी सानी में दो वा चार तोले नमक मिलाकर दिनभर में एकबेर दें और जब दोष के सब चिह्न और सूझन मिटजांय तब थोड़ीसी हरी ताज़ी घास दें परन्तु बहुत थोड़ी २ दें क्योंकि इतना ज्यादा खाने से आमाशय कुछदिन तक निस्सत्त्व और निर्बल रहता है इस लिये जो पशुको फिर अधिक खिला देंगे तो आमाशय की पाचन शक्ति फिर घट जायगी और पेट फूल जायगा, जब आमाशय वा मलाशय में कोई औषधि गुण नहींकरती तो रोगके उपचिह्न अधिक तर होजातेहैं आमाशयपर सूझन आजाती है और यह सूझन इस प्रकार से दिखाई देतीहै

कि आमाशय को हाथ के दबाने से पशु को अत्यन्त पीड़ा होती है, और सांस अति शीघ्र लेने और कराहने लगता है और जो सूझन कुछ न घटी तो पशु मरजाता है ऐसी दशा में उसके प्राण बचने का केवल एक उपाय है कि अन्तकी पसली और कूले की हड्डी के बीच तीच्ण चाक़ू से काटें इसप्रकार से कि कमर की आड़ी हड्डियों से दो इंच ऊपर से चीरने का आरंभ करें औ छः से आठइंच तक आमाशय के ओर पास में चीरे करते आवें यहां तक कि आमाशय के स्थान तक पहुंच जांय और हाथ डाल कर सब खाना उसमें से निकाललें फिर एक वा दो सेर अलसी का काढ़ा आमाशय में डाल दें और उसके साथ नंबर २ वा ५ में लिखी हुई नर्म औषधि पिलावें इसके पीछे आमाशय के घाव के मार्ग से दें फिर पहलू के चीर में से दें और बाहर के घावों में औषधि ३३ में लिखा हुआ मरहम बांध दें वा औषधि नंबर ४९ में लिखा हुआ तेल लगावें, इस इलाज के करने के लिये बड़े अभ्यास वाला मनुष्य चाहिये यद्यपि यह इलाज कठिन है परन्तु जो यह इलाज बनपड़े तो यदि आमाशय की सूझन को बहुत दिन व्यतीत न हुये हों तो बहुधा पशु चंगा हो जाता है॥

इसरोग के बन्द करनेका उपाय॥

इस रोग के न होने देने का यह उपाय है कि ऊपर के लिखे हुये कारण न होने पावें॥

दसवां अध्याय॥

तीसरे मेदे के सूझ जाने के वर्णन में।

रोग का वर्णन॥

यह रोग इस प्रकार से उत्पन्न होता है कि तीसरे कोष्ठ में कड़ा सूखा और नहीं पचने के योग्य खाना इकट्ठा होकर बहुत कड़ा

और शुष्क हो जाता है और पपड़ियां बंधकर आमाशय की परतों में जमजाताहै इस कारणसे आमाशय की शक्ति न्यूनाधिक होजाती है औ विशेष बढ़ गया तो उसकी शक्ति सर्वथा जाती रहती है और फूलन होजाती है ॥

रोग होने का कारण ॥

यह रोग प्रायः गरमी के दिनों में वा ऐसी ऋतु में उत्पन्न होता है जब घास और पानी कम होता है क्योंकि ऐसी फ़सल में पशु और भेड़ें भूख के मारे कड़ी और रेशेदार घास वा नरकुल खालेती हैं वा वृक्षों और झाड़ियों की टहनियां खाजाती हैं और तीसरे कोष्ठ में इतनी शक्ति नहीं होती कि ऐसे कठिन चारे को पीस कर पचावे इस कारण यह चारा पेट में इकट्ठा हो कर कड़ा पड़जाता है और आमाशय की परतों में जमजाता है ॥

रोग के उपचिह्न ॥

इस रोगमें जानवर जुगाली नहीं करता है और भूख बन्द होजाती है औरसांस जल्दी २ लेने लगता है और जब सांस लेता है तो उस भांति कराहता वा खरखराता है जैसे नूरोन्यू मूनियां में कराहता है, इसके विशेष जानवर को बद्ध कोष्ठ हो-जाता है और कभी रोग के प्रारम्भ में कुछ दस्त भी आते हैं परन्तु बहुधा बद्ध कोष्ठ ही रहता है और कभी २ थोड़ा सा पतला २ दस्त भी होजाता है और उसमें बहुत कड़े और काली घास के टुकड़े तीसरे कोष्ठ के पत्तों से छूटकर आते हैं और पेशाब बहुत लाल होता है और पेट फूलजाने के रूपक प्रकट होने लगते हैं, जो कुछ उपाय नहीं किया जाता तो आमाशय में जलन होने लगती है और दम घुटने लगता है और खरखराहट का शब्द अधिक आता है और जानवर दांतों को किड़ किड़ाता है उसके चेहरे से पीड़ा होने के ढङ्ग प्रगट होते हैं मुख और कान और सींग ठण्ढे होजाते हैं नाड़ी बहुत मन्द

और भारी होजाती है और मिनटभर में ८५ से १०० तक
शब्द करती है और जानवर जो लीद करता है तो वह
कुछ पतली होती है और कुछ छोटे २ चोथ होते हैं
और लीद में बहुत दुर्गन्धि आती है॥ इस रोग के अन्त
में जानवर को मूर्छा की सी दशा होने लगती है और
किसी २ समय अत्यन्त घबराहट होती है और यह घब-
राहट तब होती है जब चौथे कोठे में जलन होती है॥

रोगकीअवधि॥ यह रोग ५ दिनसे १५ दिनतक रहता है॥

चिकित्सा॥ इस की चिकित्सा में इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि आमाशय में जो कड़ा और शुष्क चारा भरा और उसकी पर्तों में जम गया है वही किसी ढब से पचजाय, इसलिये औषधि नम्बर ४ और ६ के अनुसार जुल्लाब देना चाहिये चार वा आठ तोले ताड़ी आध सेर अलसी के माड़ में मिलाकर पांच २ छः २ घण्टे के पीछे गरम गरम देना चाहिये (औषधि नम्बर ५९ देखो)॥

खाने को॥ केवल अलसी वा चावल का पतला २ मांड़ बहुतसा पिलाना चाहिये कि उससे आमाशय नरम पड़जायगा और तीसरे कोष्ठ में जो खाना इकट्ठा हुआ है वह नरम होकर सुख पूर्वक पच जायगा, जो चौबीस घण्टे में दस्त न आवे तो उक्त जुल्लाब का आधा दिया जाय और ताड़ी और अलसी का मांड़ बराबर दिये जांय जब तक दस्त न आने लगें और औषधि नम्बर ५५ की रीति से आमाशय में खूब बफारा दें—जानवर को बहुतसा पतला मांड़ अवश्य पिलावें जिससे यह दवाई तीसरे कोठे में फैल कर आमाशय में अपनी शक्ति आजावे और उसमें जो कड़ा चारा जमा हुआ है उसको पचादे—जब मांड़ अधिकता से दिया जायगा तो वह जमे हुये चारे को नरम करदेगा

और आमाशय की पर्त्तों से उसे छुड़ाकर चौथे कोष्ठ और मलाशय में ले आवेगा और सुख पूर्वक बाहर की ओर निकल जायगा, बहुधा ऐसा होता है कि बहुत दिनों के पीछे कड़ा खारा और जमा हुआ आमाशय से मलाशय में जाता है इसलिये अवश्य है कि मांड़ दियेजावें जब तक गोबर के साथ खाने के जमे हुये टुकड़े न निकल जावें, जब आरोग्य होने के रूपक दीखपड़ें तब जानवर को थोड़ी २ हरी ताज़ी घास और कई दिन तक केवल नरम और पाचक खाना देना चाहिये क्यों कि जो जानवर को सूखी घास वा पतावर खाने को देंगे तो सम्भव है कि रोग फिर लौट आवे

ग्यारहवां अध्याय ॥

बोलुद्दम रोग अर्थात् रुधिर युक्त मूत्र होने के वर्णन में ॥

रोग का वर्णन।

यह रोगरुधिर विकार का है औरपाचनशक्तिके घटजाने से उत्पन्न होता है क्योंकि जब खाना अच्छे प्रकार नहीं पकता तो रुधिर में विकार होताहै और बहुत पतला और निस्सत्व होजाताहै इस रोग में जानवर बहुत दुर्ब्बल और सुस्त होजाता है और जब इसरोगकी प्रबलता होतीहै तो घुलजाताहै और यह रोग गौबैल भैंस भेड़ आदिको होताहै बहुधा गौ और भेड़को मुख्य कर बच्चा देने के थोड़े दिन पीछे अधिक होता है सम्भवहै कि दूध देनेकी कमज़ोरीसे यह उत्पन्न होताहै॥

रोगहोनेकाकारण॥

किसी २ भूमिमें जहां से पानी का निकास नहीं होता वहां ऐसी घास जमती है जिस से यह रोग उत्पन्न होता है क्योंकि यह घास बड़ी कड़ी होती है उसमें पचने की शक्ति नहीं होती वा सूखी होती है और उसमें कड़वी घास मिली होती है, परीक्षा से निश्चय हुआ है कि जब ऐसी भूमि से पानी

और भारी होजाती है और मिनटभर में ८५ से १०० तक शब्द करती है और जानवर जो लीद करता है तो वह कुछ पतली होती है और कुछ छोटे २ चोथ होते हैं और लीद में बहुत दुर्गन्धि आती है ॥ इस रोग के अन्त में जानवर को मूर्छाकी सी दशा होने लगती है और किसी २ समय अत्यन्त घबराहट होती है और यह घबराहट तब होती है जब चौथे कोठे में जलन होती है ॥

रोगकीअवधि ॥ यह रोग ५ दिनसे १५ दिनतक रहता है ॥

चिकित्सा ॥ इस की चिकित्सा में इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि आमाशय में जो कड़ा और शुष्क चारा भरा और उसकी पर्तों में जम गया है वही किसी ढब से पचजाय, इसलिये औषधि नम्बर ४ और ६ के अनुसार जुल्लाब देना चाहिये चार वा आठ तोले ताड़ी आध सेर अलसी के मांड़ में मिलाकर पांच २ छः २ घण्टे के पीछे गरम गरम देना चाहिये (औषधि नम्बर ५९ देखो) ॥

खाने को ॥ केवल अलसी वा चावल का पतला २ मांड़ बहुतसा पिलाना चाहिये कि उससे आमाशय नरम पड़जायगा और तीसरे कोष्ठ में जो खाना इकट्ठा हुआ है वह नरम होकर सुख पूर्वक पच जायगा, जो चौबीस घण्टे में दस्त न आवे तो उक्त जुल्लाब का आधा दिया जाय और ताड़ी और अलसीका मांड़ बराबर दिये जांय जब तक दस्त न आने लगें और औषधि नम्बर ५५ की रीति से आमाशय में खूब बफारा दें—जानवर को बहुतसा पतला मांड़ अवश्य पिलावें जिससे यह दवाई तीसरे कोष्ठ में फैल कर आमाशय में अपनी शक्ति आजावे और उसमें जो कड़ा चारा जमा हुआ है उसको पचादे—जब मांड़ अधिकता से दिया जायगा तो वह जमे हुये चारे को नरम करदेगा

और आमाशय की पर्त्तों से उसे छुड़ाकर चौथे कोष्ठ और मलाशय में लेआवेगा और सुख पूर्वक बाहर की ओर निकल जायगा, बहुधा ऐसा होता है कि बहुत दिनों के पीछे कड़ा चारा और जमा हुआ आमाशय से मलाशय में जाता है इसलिये अवश्य है कि मांड़ दियेजावें जब तक गोबर के साथ खाने के जमे हुये टुकड़े न निकल जावें, जब आरोग्य होने के रूपक दीखपड़ें तब जानवर को थोड़ी २ हरी ताज़ी घास और कई दिन तक केवल नरम और पाचक खाना देना चाहिये क्यों कि जो जानवर को सूखी घास वा पतावर खाने को देंगे तो सम्भव है कि रोग फिर लौट आवे

ग्यारहवां अध्याय ॥

बोलुइम रोग अर्थात् रुधिर युक्त मूत्र होने के वर्णन में ॥

रोग का वर्णन।

यह रोगरुधिर विकार का है औरपाचनशक्तिके घटजाने से उत्पन्न होता है क्योंकि जब खाना अच्छे प्रकार नहीं पकता तो रुधिर में विकार होताहै और बहुत पतला और निस्सत्व होजाताहै इस रोग में जानवर बहुत दुर्बल और सुस्त होजाता है और जब इसरोगकी प्रबलता होतीहै तो घुलजाताहै और यह रोग गौबैल भैंस भेड़ आदिको होताहै बहुधा गौ और भेड़को मुख्य कर बच्चा देने के थोड़े दिन पीछे अधिक होता है सम्भवहै कि दूध देनेकी कमज़ोरीसे यह उत्पन्न होताहै॥

रोगहोनेकाकारण॥

किसी २ भूमिमें जहां से पानी का निकास नहीं होता वहां ऐसी घास जमती है जिस से यह रोग उत्पन्न होता है क्योंकि यह घास बड़ी कड़ी होती है उसमें पचने की शक्ति नहीं होती वा सूखी होती है और उसमें कड़वी घास मिली होती है, परीक्षा से निश्चय हुआ है कि जब ऐसी भूमि से पानी

निकाल कर और खात डाल कर खेती करते हैं तो फिर जानवर उसपर चरता है तो फिर उसको यह रुधिर मूत्रकारोग नहीं होता यह रोग बहुधा ग़रीब मनुष्यों के पशुओंके होजाता है वे उनको अच्छा चारा नहीं खिला सकते हैं जिस भूमि में दल दल होती है वहां के मैले पानीसे यह रोग उत्पन्न होताहै और बहुधा उन ऋतुओं में होता है जब जानवर कुरीज में होता अर्थात् रोयां झाड़ता है, जो जानवर मलिन भूमि पर चरते हैं मुख्य कर ऐसी भूमि पर जहां से पानी का निकास अच्छे प्रकार से नहीं होता और पांस भी नहीं पड़ती वे पशु बहुधा इस रोग में फसजाते हैं, वास्तव में यह रोग विकृत चारे वा विकार भराजल पीने से उत्पन्न होता है और मुख्य करके ऐसे चारे से पैदा होता है जो प्रत्यक्षमें मोटा परन्तु वह खानेके योग्य नहीं होता इसलिये निर्बल और पतला खून पैदा होता है और उसमें विकार का अंश भरा होता है जो मूत्र के मार्ग से निकल जाता है॥

रोगके उपचिह्न॥

विशेष कर ऐसे उपचिह्न प्रकट होते हैं जिनसे यह रोग उत्पन्न होताहै कि जानवर आनन्दित और प्रसन्न नहीं रहता और प्रकृति के बिगड़ने के कारण कभी २ चारा भी अच्छी तरह नहीं खाता और पागुर भी अच्छी तरह नहीं करता और दुधैल गौ होतो दूध कम देती है और रूएं खड़े रहते हैं और खाल पर शुष्कता और रूखापन और पीलापन आजाता है और कमर टेढ़ी होजाती है और जानवर समूह से दूर जाकर बैठता है, दस्त होने लगते हैं और दो तीन दिन तक रहते हैं उसके पीछे बद्ध कोष्ठ होजाता है, पहलू में गढे पड़जाते हैं कभी २ पेट फूल जाने के उपचिन्ह प्रकट होते और आमाशय में पीड़ा होनेके रूपक भी होने लगते हैं परन्तु उस समय तक मूत्रमें थोड़ाहीसा

अन्तर पड़ता है और कुछ थोड़ीसी लाली आ जाती है जब तक दस्त रहते हैं तब तक मूत्र में बहुत अन्तर होता है परन्तु जब बद्धकोष्ठ होजाता है तब मूत्र का रङ्ग तुरन्त बदल जाता है, और लाल वा गुलेनार होजाता है और मूतने में पशु को पीड़ा होती बहुधा चौथे दिन से बद्ध-कोष्ठ होने का प्रारम्भ होता है और जब बद्धकोष्ठ हो-जाता है तो मूत्र जल्दी जल्दी आने लगता है और उसका रङ्ग काला होजाता है और कभी २ ऐसा कालापन अधिक होजाता है कि इस रोग को काले मूत्र का रोग कहने लगते हैं और मूत्र में दुर्गन्धि भी होती है जानवर बहुत निर्बल होजाता है मुख और आंखों के ढेलों की झिल्ली पीली पड़जाती है आंखें बैठ जाती हैं मुख और कान और टांगें ठण्ढी होजाती हैं नाड़ी अति मन्द चलने लगती है जानवर सांस शीघ्र शीघ्र लेने लगता है और बहुधा पड़ा रहता है और उसकी बुरी दशा होजाती है और आमाशय में पीड़ा होने के रूपक प्रकट होते हैं परिणाम में ऐसा दुर्बल होजाता है कि उठने बैठने की सामर्थ्य भी नहीं रहती और धीरे २ वह जानवर मर-जाता है॥

रोगकी अवधि॥ यह रोग पांच वा छः दिन से २५ दिन तक रहता है॥

चिकित्सा॥ जब प्रथमही रोग के चिह्न प्रकट हों तो आमाशय को नरम औषधि से जुल्लाब देकर साफ़ करना चाहिये जिससे अजीर्ण पच जाय इसलिये औषधि नम्बर ४ के अनुसार जुल्लाब देना चाहिये और जब जुल्लाब अपना गुण कर चुके तब मन्दाग्नि को प्रबल करने वाली औषधि नम्बर १२ वा १६ वा ४१ की देना चाहिये, किसी २ समय एक प्याला जुल्लाब का देना ठीक नहीं होता इसलिये ऐसे समय में आधा प्याला

जुल्लाब का १२ घण्टे के समय में फिर देना चाहिये भोजन उत्तम चावल वा अलसी का मांड़ दिया चाहिये और हरी २ नर्म्म घास जिसके खाने से अधिक पचाव होवे खिलाना चाहिये रोग के दूसरे दर्जे में जो दस्त होने लगजांय और उसके कारण से जानवर निर्ब्बल होजाय तो पुष्ट औषधि नम्बर १३ के अनुसार दी जाय परन्तु सदैव गरिष्ट औषधि देने में बड़ी सावधानी रक्खे, जानवरको भोजन के बदले उत्तम बनाहुआ मांड दिया जावे और १॥ छटांग गुड़ और ५ तोले ताड़ी मिलाकर दिनभर में दो वा तीन बार दें और एक वा आधी छटांक अलसी के तेल में आधी छटांक गन्दाबिरोजा मिलाकर मांड के साथ दिन भर में दो वेर दें परन्तु जो दवायें गुहे में गलियान् अर्थात जोश पैदा करें उनसे बचाव करना चाहिये उसके पीछे रसादिक के पौष्टिक पाक वा बनस्पति की बनी हुई पौष्टिक औषधि नम्बर १० वा १२ वा १६ की लिखी हुई खिलाई जांय ॥

—०—

अध्याय बारहवां ॥

दस्तों के वर्णन में ।

रोग का वर्णन ॥

इस रोग में दस्त बहुत आते हैं परन्तु ज्वर नहीं होता न शरीर में कोई दोष दिखाई पड़ता है परन्तु किसी किसीसमय आमाशयमें गड़गड़ाहट होती है और आमाशय और मलाशय के दोष से बहुधा पानी से दस्त होते हैं ॥

रोग का कारण ॥

यह रोग बहुधा इस कारण से उत्पन्न होता है कि जानवर कोई विकार भरी घास वा कटु चारा खा जाता है और जिस धरती में पानी भरा रहता है दोष भरी घास पैदा होती है उस के खाने से भी जानवर को अजीर्ण के दस्त जारी होजाते

है-पञ्जाब में यह रोग पशुओं के हो जाता है और उन ऋतुओं में होता है जबकि चारा और पानी कम मिलता है और जानवर लाचार होकर विकार भरी कटुघास को खा जाता है या रेचक औषधियों के अधिक खिला-देने से भी दस्त जारी होजाते हैं और जब आमाशय और मलाशय में अधिक चारा इकट्ठा होजाता है तोभी यह रोग होजाता है (प्लूरोन्यूमूनिया) और दूसरे रुधिर विकार के रोगों के अन्तमें दस्त होनेका आरम्भ होजाता है और ठण्डके स्थान में भी रहने से यह रोग होजाता है मुख्यकर उस समय जब मलाशय में प्रथम से विकार भर गया हो-कभी अधिक तपन से भी यह रोग हो जाता है और प्राय: उन पशुओंको भी दस्त होजाते हैं जो ऐसे खेतों में चरते हैं जिनमें पानी के प्रथम दौंगड़ा पड़जाने के पीछे हरी २ घास उग आती है ॥

रोग के उपचिह्न ॥

जानवर बहुधा पानी सी पतली लीद करता है और उसके साथ वायु भी निकलती है परन्तु पहिले उसके बन्द होने में कुछ दर्द और खुजली नहीं दिखाई देती-भूख अच्छी तरह लगती है परन्तु कुछ पागुर करने में अन्तर होजाता है और गौके होते पहिले से दूध भी घटजाता है परन्तु पशुके आरोग्य हो जाने में कुछ विघ्न नहीं दीखता जो बहुत दिनों तक दस्त आते जाते हैं तो परिणाम में दस्त होने में मड़ोड़े होते हैं और जानवर की कमर झुकजाती है और थोड़ी बहुत पीड़ा होने लगती है और कभी २ गोबर के साथ रुधिर भी आता है और पञ्जाब में यह रोग बहुधा घातक होता है ॥

चिकित्सा ॥

इस रोग की चिकित्सा इस रोग के कारणों को देख कर होसक्ती है परन्तु सबसे अधिक इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि जान-

वर का चारा पानी बदल दिया जाया करे और इस बात का भी विचार रहे कि जो चारा वा पानी उसे दिया जाय वह उत्तम और मीठा हो उसके पीछे औषधि नम्बर २४ के अनुसार जुल्लाब दिया जाय और जो इतने पर भी आमाशय में दर्द और पीड़ा हो तो तोले भर अफ़ीम भी जुल्लाब के साथ दीजाय जब इस रोग की प्रबलता हो तो खाने को केवल चांवल का मांड और भूसे की सानी देना चाहिये और औषधि के गुण करने के पीछे भी दस्त आ जांय तो औषधि नम्बर २७ दीजाय और अवश्य जान पड़े तो फिर भी औषधि दीजाय जानवर के खाने को उत्तम और मधुर चारा दिया जाय और जब दस्त बन्द होजावें तो कई दिन तक पानी के बदले चावल और अलसी और गेहूं के आटे का महेला खिलावें और जो जानवर निर्ब्बल और दुबला होगया हो तो आमाशय के प्रबल करने वाला पाक औषधि १२ और १६ के अनुसार दिन भर में एक वा दो वेर दें जब रोग दब जाय तो नम्बर २३ और २५ की लिखी हुई पुष्ट औषधि देनी चाहिये जब रोगी पशु का उत्तम उपाय और संभाल होती है और अच्छे स्थान में रक्खा जाता है और अच्छा चारा पाता है जैसा प्रथम लिख आये हैं तो बहुधा चङ्गे हो जाते हैं ॥

अध्याय तेरहवां ॥

पेचिश और मूत्र कृच्छ्र रोग के वर्णन में ॥

रोग का वर्णन ॥

इस रोगमें मलाशय की झिल्ली में खुजली उठ आती है और कभी उक्त मलाशय में घाव वा छेद पड़ जाता है और आंव लहू और पीप गोबर में निकलती है और पतला २ मवाद पानी के समान निकलता है ॥

यह रोग दस्तों के पीछे पैदा होता है वा इसका कारण यह होता है कि चौपाये हानि कारक वा विकृत घास और बनस्पति खाजाते हैं वा ख़राब पानी पीजाते हैं वा उष्णकालमें रात्रि को अति शीत और ओस खाते हैंमुख्य करके जब पशु दल दल में बांधे जाते हैं तो प्राय:उनको यह रोग होजाता है ॥

रोगका कारण ॥

जो दस्त होने के पीछे पेचिश होजाय तो जो उपचिह्न दस्त के विषय में लिखे गये हैं वेही इसमें भी प्रकट होंगे जो प्रथम दस्त न हुये और योंही पेचिश होजाय तो तुरन्त होभी जाती है और प्रथम कुछ ज्वरसा भी जानपड़ता है इसके पीछे दस्त बारम्बार आने लगते हैं और कुछ कड़े २ गोबर के चोथ आते हैं बाक़ी पानी से दस्त आते हैं और उनमें आंव लहू मिला रहता है और आंव अण्डे की सफ़ेदी के सदृश होती है, पेटमें दर्द होने के रूपक दिखाई देते और जानवर गोबर करने के समय कांखता है और अधिक कांखने से गुदा बाहर को निकल आती है जो कि इसमें कलेजा रोगी होजाता है इसकारण मुख के भीतर की झिल्ली और आंखों के ढेलों और शरीर के चमड़े पर पीलापन आजाता है ॥

उपचिह्न ॥

औषधि नम्बर ५५ के अनुसार उष्ण जल पेट में इतना लगाओ कि वह स्थान कुछ जलजाय वा लोहा गरम करके पेट पर हलकासा दाग़ लगाओ और औषधि नंबर ४५ के अनुसार जुल्लाब दो और मड़ोड़ा अधिक होतो कमर में कसकर रस्सी बांध दो और औषधि नम्बर ६४ के अनुसार पिचकारी दो वा तीन दिन तक आमाशय को कोमल रखना चाहिये परन्तु अधिक दस्त भी न आने देना चाहिये इसके पीछे औषधि ४३ के अनुसार जुल्लाब देना चाहिये और केवल आधे

चिकित्सा ॥

चावल और आधी अलसी का मांड जानवर को खाने को दो और मांडमें थोड़ासा नमक भी मिलादो जो इतने पर भी पेचिश बनी रहे तो औषधि नम्बर ४५ के अनुसार जुल्लाब दिन भर में एक वा दो बेर दो और केवल चावल का मांड यहां तक पिलाओ कि दस्त बंधा हुआ होने लगे तब आधे चावल आधी अलसी का मांड पिलाओ,

जब जानवर पेचिश* से अच्छा होजाय तो उसे केवल मीठा और पचने वाला चारा देना चाहिये नहीं रोग लौट आवेगा, ऐसे जानवर को साफ़ और सूखे और ऊंचे हवादार स्थान में रखना चाहिये और शीतकाल की रात्रि में कम्मल उढ़ादेना चाहिये ॥

अध्याय चौथवां ॥

भेडों में कीड़े पड़जाने के वर्णन में ॥

रोग का वर्णन ॥ इस रोग में जानवर के कलेजे में एक प्रकार के कीड़े पड़जाते हैं और जब भेड़े नीची और दल दल की भूमि पर चरती हैं तब उनको यह रोग होजाता है परन्तु जब ऐसी भूमि से पानी की निकासी अच्छे प्रकार से होजाती है तो जो भेड़ें उसपर चरती हैं उनको यह रोग नहीं होता है ॥

रोक के उपचिह ॥ यह रोग बड़ा कठिन होता है भेड़का शरीर घुल जाता है और जब उसके पट्ठों और कूलों पर हाथ धर दबाते हैं तो खालके भीतर चरचराहट का शब्द सुन पड़ता है प्रथम खाल अति पीत

---

* विदित हो कि रेंडर पेस्ट रोग के अन्त में जानवर को पेचिश होजाती है परन्तु जो बहुधा उपचिह्न रेंडर पेस्ट रोगमें पाये जाते हैं वे पेचिश में नहीं होते जैसा प्रथम अध्याय में लिखा गया है ॥

होजाती है और जानवर के रोयें फटजाते हैं और योंहीं खेंचने से लुच आते हैं फिर थोड़े दिनों के पीछे खालका रङ्ग बिगड़ जाता है अर्थात् उसपर पीले पीले काले काले से धब्बे पड़जाते हैं ॥ आंखों की चमक दमक जाती रहती है और आंखों की सफेदी में पीला-पन आजाता है कमर कुछ झुक जाती है और पेट बढ़ जाता है जानवर को तृषा बहुत रहती है परन्तु चारा बहुत खाता है और बार बार खांसता है और कभी खांसने का यह कारण होता है कि फेफड़े में सूच के समान कीड़े पड़जाते हैं, थोड़े दिनों में दस्त आने लगते हैं और लगातार आये जाते हैं वरन अधिक होते जाते हैं और जानवर धीरे धीरे निर्ब्बल और दुबला होता जाता है परिणाम मरजाता है ॥

चिकित्सा ॥

जब यह रोग किसी पशु के समूह में होता है तो प्रथम यह उचित है कि भेड़ों को किसी ऊंचे स्थानपर लेजाके रक्खें जहांकड़ी घास जो पानी में उगती है न हो जिस जानवर को यह रोग होता है उसे किसी सूखे और छाया के स्थान में रखना चाहिये औषधि नम्बर १५ के अनुसार दिन भर में एक वा दो बार जुल्लाब देना चाहिये और खानेको शुष्क और मीठा चारा और पुष्टाई देना चाहिये जैसा सूखी घास जो ऊंचे स्थान पर उगती है और अन्न आदि मेंसे कोई चीज और चावल का मांड थोड़े से नमक के साथ मिलाकर देना चाहिये ॥

—०—

अध्याय पन्द्रहवां ॥

खांसी ॥

रोगका वर्णन ॥

इस रोग में गले के नल और उसकी शाखाओं में जो फ़ेफ़ड़े से जाकर मिले हैं जलन होती है ॥

भेड़ों और गाय के बच्चों को जो यह गले की जलन का रोग होजाता है तो उसका यह कारण होता है कि गले के नले और उसकी शाखों में सूत के समान कीड़े पड़जाते हैं कीड़ों की उत्पत्ति इस प्रकार से होती है कि जानवर इनके अण्डे चारे के साथ वा और किसी प्रकार से खाजाता है वह शरीर में जाकर कीड़े बनजाते हैं परन्तु जब उमरवाले जानवर को यह रोग होता है बहुधा उसका कारण यह होता है कि जानवर किसी मैले स्थान वा ठण्ढे स्थान में रहा हो वा और कारण ऐसे होते हैं जिनसे गले में नजला और खुजली पैदा होती है ॥

रोगहोनेकाकारण॥

जब यह गलेकी जलन का रोग जवान चौपायों को होता है तो प्रथम बहुत सूखी खांसी-आती है जानवर सांस जल्दी २ लेता है और गले के नीचे कान लगाकर सुनने से खरखराहट का शब्द अच्छी तरह सुनाई देता है थोड़े ही समय के पीछे खांसी तर होजाती है और गले के नल और उसकी शाखों की झिल्ली से लसदार लार निकलती है और खांसी के पीछे नथनों और मुखसे राल और मैला कफ़ बहता है, जब कम उमर के चौपायों और भेड़ों में सूत के सदृश कीड़े पड़जाते हैं तो खांसी बार २ आती है और बहुत सूखी होतीहै, जानवर को बहुधा खांसीका दौरासा आता है आगेके पांव फैलाकर और कहुनियां तोड़कर बैठता है और सिर और गरदन आगे को फैला देताहै और सिरको कुछ झुकाये रहताहै जिससे खांसी आने में दुःख नहो और चाहता है कि जो कीड़े गले के नल और उसकी शाखों में कफ़ के साथ मिले हुये रेंगते हैं खांसकर निकाल डाले जानवर निर्बल और दुबला होजाता है और दोही तीन सप्ताह केबीच में

रोग के उपचिह्न॥

मरजाता है जब एक जानवर को यह रोग होता है तो
और बहुत से जानवरों के भी होजाता है ॥

जब यह बुड्ढे पशु को गले की जलन के रूपक प्रकट
होते हैं तो उसका उपाय शीघ्र करना

चिकित्सा ॥

चाहिये फफोले डालने वाली बड़ी तीक्ष्ण
और उत्तम जैसी औषधि नम्बर ५१ में लिखी है गले के
नीचे के भाग में और गरदन के चारों ओर खूब मलें
वा लोहा गरम करके दाग़ दें परन्तु जो रोग की प्रबलता
होतो फफोले डालने वाली औषधि लगावें और
नम्बर २० के अनुसार जुल्लाब भी दें और औषधि इस
प्रकार से पिलावें जैसा औषधि नंबर ६७ में लिखा है—
जानवर को छाया के स्थान में रक्खें जहां ताज़ी और साफ़
वायु से दम लेसके अर्थात् घिरे हुये वा मैले स्थान में न
रक्खें—और खाने को केवल चांवल अलसी के मांड में
औषधि नंबर १६ का लिखा हुआ चूर्ण मिलाकर दिन
भर में एक वा दो बेर दें और जो रात्रि में शीत अधिक
पड़ता हो तो जानवर को कम्बल उढ़ाकर खूब गरम रक्खें
और सूखे बिछौने पर सुलावें जो फफोला डालने वाली
औषधि के लगाने के पीछे रोग के उपचिन्ह घटित न दीखें
तो औषधि का गुण पूरा करने के लिये औषधि नंबर ५०
का लिखा हुआ मरहम दिन भर में दोबेर उस स्थान पर
लगावें जहां वह फफोला डालने वाली औषधि लगाई थी,
और किसी २ समय इस रोग में फेफड़ा भी सूज आता
है और तीसरे अध्याय के लिखे हुये उपचिन्ह प्रकट होते
हैं—जब थोड़ी उमर के चौपाये वा भेड़ों के गले के नल
और उसकी शाखों में सूत के सदृश कीड़े पड़जांय तो
जानवर को औषधि नंबर २० के अनुसार और भेड़ों को
औषधि नंबर २२ के समान जुल्लाब दें और खाने में बहुतसा
नमक मिला दिया करें—और जो बहुत से जानवरों को

ये रोग होजांय तो अत्युत्तम उपाय यह है कि प्रतिदिन उनको किसी बंद स्थान में रक्खें और उसस्थान में गंधक इस प्रकार से जलावें कि उसकी गंध उनसबकी नाक में जाय जैसा औषधि नंबर ५६ में लिखा है और जो आध घंटे तक गंधक की गंध सूंघकर जानवर को अधिक खांसी आने लगे तो उसस्थान में ताज़ी हवा आने दें और फिर उस दिन गन्धक न जलावें ॥

अध्याय सोलहवां ॥

विषदेने के वर्णन में ॥

विदित हो कि जानवर विष से भी मरजाता है वा दैवयोग से चारे के साथ खाजाय वा कोई दुष्ट मनुष्य जानबूझ कर खिला दे ॥

विषकावर्णन ॥

विष दोप्रकार का होता है एकतो वनस्पति में किसी घास में होता है और दूसरा संखिया आदि विष—हिंदुस्तान के किसी २ देशों में चमार लोग चमड़े के लालच से जानवरों को विष देते हैं यह रीति संपूर्ण हिंदुस्तान भर में है किजो पशु मर जाते हैं उनकी लोथों को घूरे पर डाल देते हैं और उनका चमड़ा गांव के चमारों को विना कुछ लिये देदेते हैं—और किसी २ ज़िलओं में चमार लोग ज़मीदारोंको कुछ रुपया देते हैं जिससे उन्हींको चमड़ालेने का हक़ रहे—बहुधा ऐसा होता है कि चमार चमड़ा चमड़े वालों के हाथ बेचडालते हैं और बहुत से ज़िलओं में ऐसा भी होता है कि चमार और चमड़ेवालों में इक़रारनामा होजाता है और चमड़े वाला चमार से इक़रार करता है कि तुम इतने समय के भीतर इतना चमड़ा हमें लादो और इतना रुपया हमसे लो और बहुधा ऐसा भी होता है कि चमड़े वाला चमार को कुछ पेशगी रुपया

देदेता है—इसलोभ से चमार बहुधा पशुको विष देदेते हैं जिससे इक़रारनामे की लिखी हुई अवधि के भीतर चमड़ा पूरे प्रमाण का मिलजाय जो कि बहुत से चमार पकड़े भी गये हैं कि या तो उन्होंने अपने हाथ से पशु को विष देदिया है वा अपनी स्त्रियों वा लड़कों के हाथों से दिलवा दिया है॥

विष देने की रीतें॥

बहुधा पशुको इसरीति से विष देते हैं कि थोड़े से घी और मैदे में विष मिलाकर उसे केले वा और किसी वृक्ष के पत्ते में लपेट कर पशुके मुखमें डाल देते हैं वा जब वह चारा खाता है तो उसे सामने डाल देते हैं कि वह आप उठाकर खा-जाता है—दूसरा ढब यह है कि पशुके चरने के स्थान में विष छिड़क देते हैं—तीसरा प्रकार यह है कि किसी लोहे की पैनी अर्थात् तीक्ष्ण वस्तु के सिरे पर विष लगा कर शरीर में किसी स्थानपर उसे चुभो देते हैं वा मल सूत्र करने के स्थान में घुसेड़ देते हैं—श्वेत वा पीला सं-खिया देते हैं परन्तु विशेष करके श्वेत संखिया देते हैं और कभी कोई विषदार घास जैसे धतूरा वा जमालगोटा वा कुचला वा मदार के पत्ते खिलादेतेहैं कोई मनुष्य यह भी कहते हैं कि चमड़े वालों के कारिंदे चमारों को विष ला देते हैं और प्रायः ऐसा भी होता है कि जानवरों को विष खिलाकर मारडालते हैं और यह सूढ़ा करते हैं कि मरीरोग अर्थात् हैज़ा आया उससे मरगये जैसा कि कभी किसी ज़िलअ में-रेन्डर पेस्ट रोग होता है तो उसी हीले से पशुओं को विषदेकर बहुतसा चमड़ाले लेते हैं—चमार लोग एक और भी हिकमत करते हैं वो यह है कि—जो कि वह जानतेहैं कि रेन्डर पेस्टरोग संसर्गी रोगों से है इससे जब कोई पशु इसरोग से मर जाता है तो उसके आमाशय और मलाशय मेंसे मवादको

निकाल कर किसी दूरके गांव में लेजाते हैं—जहां यह रोग नहीं होता और उस मवाद को चरागाहों में फैला देते हैं जिससे वहांके आरोग्य पशुओं में भी यह घातक रोग प्रवेश कर जाय और उन हरामखोरों को बहुत सा नवीन चमड़ा मिलजाय॥ कभी २ अरण्ड के पत्ते और बीज खानेसे भी पशु मरजाते हैं क्योंकि उनमें भी विष होता हैं और जब कभी सूखा पड़जाता है और घास नहीं रहती तो भूखके मारे कड़वी घास वा बूटी खाजाते हैं उससे भी मर जाते हैं॥

पशु विष खागया होउसके उपचिह्न॥

जब गौ वा बैल बहुतसा विष खाजाताहै वा उसे खिला देते हैं तो यह चिह्न प्रकटहोते हैं कि पशु एका एकी मांदा पड़ जाता है उसके पीछे उसके शरीर में झुड झडी पड़ जाती है और आमाशय में बड़ी पीड़ा होनेलगती है और पिछले पावों वा सींगोंसे पेटपर मारता है॥

और मुख फेर २ कर पहलूके ओर देखता है मुखसे कफ बहता है*तृषा बहुत लगती है औ कुजाजकी भांति अंगों में ऐंठन होने लगती है और पेटफूलने के रूपक दीख पड़ते हैं बारबार लीद करता है दस्तहोने लगते हैं और दस्तों में कुछ २ रुधिर आता है और बहुधा दो वा चार घंटे में पशु मर जाता है मरने की अवधि विषके प्रमाण और प्रकार पर संभव है॥

प्राय: इतना विष खिला देते हैं कि कोई उपाय नहीं होसक्ता है और जो औषधि विषके दूर करने की है वह समय पर पशु के मालिकों के पास नहीं होती

* कुजाज उस रोगको कहते है कि जिसमें गलेके ऊपर ऐंठन होती है औ वह मुड़ नहीं सकती॥

जब पशु के मालिकों को निश्चय होजाय कि हमारे पशु को किसीने विष खिलाया है तो चौथे कोष्ठ अर्थात् मलाशयका कुछ मवाद और छोटी अंतड़ी के सिरेका टुकड़ा और छोटासा टुकड़ा आमाशय का और बड़ी अंतड़ी का वह टुकड़ा जहां पर अंतड़ी आमाशय से मिली है उसे निकाल कर बड़ी सी बोतल में भरदें और उसमें बहुतसी तेजताड़ी डाल कर ऊपर बड़े ज़ोर से डाट लगावें फिर उस बोतल को परीक्षा के लिये रसायनी डाक्टर के पास भेजदें मेजिस्ट्रेट साहिब वा सिविल सरजन को उचित है कि पशु के मालिक को बतलावें कि इस बोतल को रसायन जानने वाले डाक्टर के पास इस प्रकार से भेजो ॥

विष देनेवाले के पकड़ने का उपाय

जिस अवस्था में कि विष थोड़ा दिया गया हो और अधिक उपचिह्न प्रकट न हों तो तुरंत औषधि नंबर २ वा ३ के अनुसार जुल्लाब दें और अलसी का मांड बहुत दें परन्तु पानी न दें जब तक पीड़ा और दस्त बंद न होजांय ॥

खानेको

खाने को सानी और एकवा दो दिन पीछे हरी २ घास दें परन्तु कड़ी घास न दें ॥

अध्याय सत्तहवां ॥

इस अध्याय में अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी तोल और माप बराबर कर के लिखी गई हैं ॥

तोल

अंगरेजी	हिन्दुस्तानी
१ स्क्रूडूपिल =	२ आने
१ ड्राम =	६ आने
$1\frac{1}{2}$ ड्राम =	८ आने वा आधे तोले
२ ड्राम १० ग्रीन =	$\frac{3}{4}$ तोला = $\frac{1}{2}+\frac{1}{4}$ रुपये
३ ड्राम =	३ ड्राम = १ तोलेवा १ रुपये

४ ड्राम = $\frac{1}{2}$ औन्स =	१$\frac{1}{4}$ तोले = १ रुपया चार आने
८ ड्राम = एक औन्स	२$\frac{1}{2}$ तोले = २ रुपया आने ८
२ औन्स =	५ तोले = १ छटांक
१ पौंड =	६ छटांक = डेढ़पाव

पैमाना

$\frac{1}{2}$ औन्स =	$\frac{1}{4}$ छटांक
१ औन्स =	$\frac{1}{2}$ छटांक
२ औन्स =	१ छटांक
१ पौंड =	६ छटांक वा डेढ़पाव
१ क्वार्टर =	$\frac{1}{2}$ सेर
२ क्वार्टर =	१ सेर
१ पैन्ट =	$\frac{1}{4}$ सेर

दस्त और जुल्लाव देने को ॥

पहिली औषधि ॥

महीन पिसा हुआ जमालगोटा १। माशे खाने का नमक वा खारी नमक ३ छटांक इन दोनों औषधियों को मिलाकर जो बद्धकोष्ठ हो तो आधसेर चांवल के गरम मांड़ में पिलावें ॥

दूसरी औषधि ॥

गंधक महीन पिसी हुई ५ तोले अलसी का तेल १० तोले आधसेर गरम चांवल के मांड में यह नरम करने वाली औषधियां जुल्लाब होचुकने के पीछे आमाशय को नरम रखती हैं ॥

तीसरी औषधि ॥

अलसी का तेल पाव भर गंधक महीन पिसी हुई १० तोले सोंठ १। तोले यह जुल्लाब आधसेर गरम

चांवलके मांड के साथ दिया जाय परन्तु जो भेड़ हो तो आधी तोल में दीजाय ॥

चौथी औषधि ॥

खाने का नमक ६ छटांक गंधक महीन पिसीहुई ६ तोले एलुआ कड़ुआ ५ तोले सोंठ २॥ तोले गुड़ १० तोले गरम पानी १ सेर यह जुल्लाव दियाजाय परन्तु जो भेड़ होतो इसका छठवां भाग दिया जाय ॥

पांचवीं औषधि ॥

खानेका नमक १० तोले गंधक महीन पिसी हुई १। तोले सोंठ ६ तोले गुड़ १॥ छटांक आमाशय के कोमल करने वाली यह औषधि २ सेर गरम पानी में खूब मिलाकर जब वह ठंडा होजाय तब पिलादें ॥

छठवीं औषधि ॥

खारी वा खाने का नमक ६ छटांक एलुआ गरमपानी में भीगाहुआ १। तोले अलसी का तेल १० तोले महीन पिसीहुई सोंठ १। तोले हिंदुस्तानीशराब १ छटांक यह जुल्लाव बड़ा बलिष्ठ है ये सब औषधि दो सेर गरमपानीमें मिलाकर गरम २ पिलावें-यह जुल्लाव जवान और बड़े बड़े पशुओं के लिये है और थोड़ी अवस्था के गौ वा बैल के लिये इसका आधा ठीक होगा और जो भेड़ होतो इसका छठवां भाग देना चाहिये ॥

ज्वरकी औषधियाँ ॥

सातवीं औषधि ॥

कपूर ८ मासे शोरा १ तोले हिन्दुस्तानीशराब २। तोले कपूर को ताड़ी में पिघलाकर उसमें शोरा मिलावें और सेर भर ठंडे पानी में पिलावें ॥

आठवीं औषधि ॥

शोरा १। तोले खानेका नमक २॥ तोले महीन पिसाहुआ चिरायता २॥ तोले गुड़ १॥ छटांक सेरभर पानी में दें ॥

नवीं औषधि ॥

कपूर ६ मासे शोरा ६ मासे धतूरे के बीज बारीक पीसे ४॥ मासे हिंदुस्तानी शराब २॥ तोले कपूर ताड़ी में मिलाकर शोरा और धतूरे के पिसे हुये बीज मिलादें फिर आधसेर चांवल के पतले मांड के साथ पिलावें ॥

दशवीं औषधि ॥

ताज़ा औ पुष्टाई करनेवाली ॥

खानेका नमक २ छटांक महीन पिसी हुई सोंठ २ छटांक जचियाना अर्थात् करो १ छटांक जिस बैलकी भूख कम होजाय उसे खाने के समय यह औषधि आधी छटांक दीजाय ॥

ग्यारहवीं औषधि ॥

सुरमा १ छटांक सोंफ पिसीहुई २ छटांक खाने का नमक २ छटांक जो जानवर की भूख बंद होजावे इस औषधि की चौथाई तोलदी जाय ॥

बारहवीं औषधि ॥

महीन पिसीहुई सोंठ १। तोले चिरायता १। तोले गोलमिरच १। तोले अजवायन १। तोले खानेका नमक १ छटांक इन औषधियों को महीन पीस कर और मिला कर चौथाई भाग गुड़ के साथ गरम मांड़ में पिलावें ॥

तेरहवीं औषधि ॥

महीन पिसीहुई खरियामिट्टी १ छटांक सफेदकत्था २॥

तोले महीन पिसी सोंठ १। तोले अफीम ४॥ मासे हिंदुस्तानी शराब १ छटांक पानी डेढ़पाव इन ओषधियों को खूब मिलाकर भेड़ के बच्चों को सायंकाल और प्रातःकाल एक वा दो छटांक दो, और गौके बच्चों को उसकी दूनी दो॥

चौदहवीं ओषधि॥

शराबहिंदुस्तानी आधपाव महीन पिसीहुई सोंठ १ छटांक गोल मिरच १। तोले इन ओषधियों को खूब मिलाकर आधसेर गरम पानी में दो छोटी उमर के पशु को इसका आधा उपयोगी होगा॥

पन्द्रहवीं ओषधि॥

नमक खानेका ६ मासे हीराकशीस १॥ मासे खूब महीन पीस कर जिन भेड़ों को कीड़े पड़जांय प्रति दिन उनको दो॥

सोलहवीं ओषधि॥

कशीस ४॥ मासे महीन चिरायता १। तोले खूब मिलाकर आधसेर चावल के मांड में दो॥

सत्रहवीं ओषधि॥

नौसादर और शोरा बराबर तोल में लेकर २ सेर पानी में घोलकर मोच वा चोट पर तड़ेड़ा देवें॥

कीड़ोंके दूर करने की औषधियां ॥

अट्ठारहवीं औषधि ॥

हींग १। तोले महीन पिसीहुई गंधक ५ तोले आधसेर गरमपानी में पांच वा ६ दिन तक बराबर दें ॥

उन्नीसवीं औषधि ॥

खानेका नमक १ छटांक हीराकसीस १। तोले महीन पिसाहुआ गंधक २॥ तोले दिन भरमें एक वा दो बेर तीन वा चार दिन तक दें ॥

बीसवीं औषधि ॥

ताड़पीनका तेल १ छटांक अलसीका तेल ३ छटांक इन दोनों को खूब मिलाकर सेरभर गरम मांड़ में दूसरे वा तीसरे दिन दिया करें ॥

इक्कीसवीं औषधि ॥

खानेका नमक ६ मासे हीराकसीस १॥ मासे इस का चूर्ण बनाकर जिस भेंड़को कीड़ोंका रोग होगया हो उसे प्रतिदिन दो ॥

बाईसवीं औषधि ॥

अलसी का तेल १ छटांक ताड़पीन का तेल १। तोला इनको मिलाकर कीड़ों के निकल जानेके लियेभेंड़को दें ॥

पुष्टाई ॥

तेईसवीं औषधि ॥

तूतिया अर्थात् पिसाहुआ नीलाथोथा ४ मासे से आठ मासे तक पानी आधसेर तूतिया को पानी में घोलकर दस्त होनेके स्थान में भेड़ कोदें ॥

चौबीसवीं औषधि ॥

खरिया महीन पिसीहुई ३॥ तोले गोंद ६ मासे अफीम ४॥ मासे चिरायता महीन पिसा १। तोले इन सबको महीनपीस कर एक छटांक हिंदुस्तानी शराब में मिलावें फिर सेरभर चांवल के मांड़ में कब्ज के लिये चौपायों कोदें ॥

पच्चीसवीं औषधि ॥

सफेदा १॥ मासे खरिया पिसी हुई २॥ तोले अफ़ीम ६ मासे खूब गाढ़े मांड में मिलाकर दिन भर में दो वेर पशुको दो जिसको पेचिश हो रहीहो ॥

छब्बीसवीं औषधि ॥

तूतिया डेढ़मासे से ३ मासेतक पावभर शुद्धजल में मिलाकर भेड़कोदें ॥

सत्ताईसवीं औषधि ॥

खरिया महीन पिसीहुई १ छटांक सफेद कत्था २॥

तोले सोंठ महीनपिसी १। तोले अफीम ४॥ माशे हिं-दुस्तानी शराब १ छटांक पानी १॥ पाव इन सब को मिलाकर भेड़के बच्चे को एक से दो छटांक तक सबेरे औ संझा को दो और गौके बच्चे को इससे दूनातोल में दो ॥

अट्ठाईसवीं औषधि ॥

खरियामहीन पिसीहुई १। तोला अफीम १॥ मासे रेविंदचीनी ९ मासे इन सबको खूब मिलाकर दूध वा अलसी के मांड में गायके बच्चे को पेचिश में दें और भेड़ के बच्चे को इसकी तिहाई दें ॥

उनतीसवीं औषधि ॥

अफीम पिसी २ चावलभर खरिया महीन पिसी ४॥ मासे अतियाना अर्थात् कत्थो ४॥ मासे सोंठ महीन पिसी हुई ४॥ मासे अलसी के पानी में भिगोकर दस्तों के रोग में भेड़को दें ॥

ऊपरी इलाज ॥

तीसवीं औषधि ॥

महीन पिसी हुई खरिया २ छटांक कोयले २॥ तोले फिटकरी १। तोले नीला थोथा १ तोले इन्हें बारीक पीसकर जो चौपायों वा भेड़के शरीर वा मुखमें नासूर पड़ जाय तो उस पर छिड़कें ॥

इकतीसवीं औषधि ॥
तूतिये का मरहम ॥

नीलाथोथा ४॥ मासे ताड़पीन ४॥ मासे अलसीका तेल २ छटांक कच्चामोम २ छटांक तेल और मोमको साथ पिघलाओ फिर ताड़पीन का तेल और नीलाथोथा मिलाकर ऐसा घोटो कि औषधियां ठंढी होजांय फिर घावों पर लगाओ बहुत गुण कारीहोगा ॥

बत्तीसवीं औषधि ॥

नीलाथोथा ४॥ मासे गरम पानी पाव भर में घोलकर जब ठंडा होजाय तो तड़ेड़ा दो ॥

तेंतीसवीं औषधि ॥
फिटकरी का मरहम ॥

फिटकरी २॥ तोले अलसी का तेल १॥ छटांक कच्चा-मोम १॥ छटांक ताड़पीन का तेल १। तोले मोम और तेल को साथ पिघलाओ फिर उसमें ताड़पीन और फिट-करी मिलादो और इतना घोटो कि ठंढा होजाय फिर उसके घाव पर मलदो ॥

चौंतीसवीं औषधि ॥
फिटकरी का तड़ेड़ा नम्बर १ ॥

फिटकरी २॥ तोले पानी आधसेर में पिघला कर तड़ेड़ा दो ॥

पैंतीसवीं औषधि ॥

फिटकरी का तड़ेड़ा नम्बर २ ॥

फिटकरी ९ मासे गुड़ २ छटांक आधसेर पानी में मिलाकर तड़ेड़ा करो ॥

छत्तीसवीं औषधि ॥

एलुवा कड़ुआ १। तोले हीरा कसीस ९ मासे सोंठ १। तोले यह औषधियां महीन पीस कर डेढ़ छटांक गुड़ मिलाकर पतले पतले आधसेर गरम चावल के मांड़ के साथ दो और एक वा दो दिन मध्यमें छोड़ दिया करें ॥

सैंतीसवीं औषधि ॥

गन्धक पिसा २॥ तोले शोरा ९ मासे सोंठ २॥ तोले खूब मिलाकर पीच के साथ दिन भर में एक वा दो बेर दो ॥

अड़तीसवीं औषधि ॥

खानेकानमक २॥ तोले गंधक पिसा हुआ २॥ तोले खूब मिलाकर पशुको दो और गाय और भेड़के बच्चों को यह औषधि दोबार उक्त प्रमाण के अष्टमांश भूसे वा मांड़ के साथ मिलाकर दो ॥

पट्ठों और बलिष्ठ अङ्गों को ऐंठन के दूरकरने की औषधियां ।

उनतालीसवीं औषधि ॥

ताड़पीन का तेल १॥ छटांक अलसी का तेल १॥ छटांक गरम मांड़ एकपाव आपस में सबको मिलाकर पेटके फूलने में दो ॥

चालीसवीं औषधि ॥

नौसादर ६ मासे से १ तोलेतक पानी एक पाव में मिलाकर पेट के फूलने में दो ॥

इकतालीसवीं औषधि ॥

हिन्दुस्तानी शराब २ छटांक से ३ छटांक तक पिसी सोंठ १। तोले गोलमिरच १। तोले गुड़ १॥ छटांक आपसमें खुब मिलाकर सेर भर गरमपानी में दो ॥

बयालीसवीं औषधि ॥

तंबाकू के पत्ते पिसे हुये १। तोले गुड़ २ छटांक गरम पानी १॥ पाव खूब मिलाकर पिलाओ ॥

तेंतालीसवीं औषधि ॥

धतूरे के महीन पिसे हुये बीज ४॥ मासे कपूर ६ मासे हिंदुस्तानी शराब २ छटांक हिंदुस्तानी शराब को कपूर में घोपकर धतूरे के बीज मिलादो और सेरभर गरम चांवल के मांड़के साथ दो ॥

चवालीसवीं औषधि ॥

ताड़पीन का तेल ६ मासे से एक तोले तक सरसों का तेल आधपाव खूब मिलाकर गरम चांवल के मांड़ के साथ दो ॥

पैंतालीसवीं औषधि ॥

अलसी का तेल पावभर अफीम १ तोले सेरभर चांवल के मांड़ के साथ दो ॥

छयालीसवीं औषधि ॥

पशुकी खुजली मिटाने का मरहम ॥

तारका तेल ताड़पीनका तेल सरसों कातेल सब बराबर तोल में इसमें गंधक इतना मिलाओ कि जिससे गाढ़ा होजाय और एक दिन के अन्तर से सदैव जानवर के शरीर में दो वा तीन दफ़अ मल दो ॥

सैंतालीसवीं औषधि ॥

सरसों का तेल १ सेर शंजर्फ ३ मासे तेलको आग पर गरम करो और शंजर्फ को खूब महीन बारीक पीस कर उसमें मिलादो थोड़ी देर के पीछे गरम २ मलदो ॥

अढ़तालीसवीं औषधि ॥

जो पशुका सींग टूटजाय तो रालको किसी मोटे कपड़े पर मलकर उस टूटे सींग पर बांध दो ॥

उन्चासवीं औषधि ॥

कपूर १ भाग ताड़पीन $\frac{1}{4}$ भाग सरसोंका तेल ४ भाग इन सबको खूब मिलाकर जिन पशुओं वा भेड़ों के पांव में घाव पड़जाय उनमें लगाओ और जो मांस बढ़ गया होतो थोड़ासा नीलाथोथा पीसकर छिड़क दो ॥ ॥

पचासवीं औषधि लेप ॥

सरसों का तेल ताड़पीन का तेल तोलमें बराबर लेकर आपस में मिलाकर खूब रगड़ २ घावों पर मलो ॥

इक्कावनवीं औषधि ॥

बुस्टर अर्थात् छाले डालने वाली औषधि ॥

तेलिया मक्खी एक भाग अलसी का तेल ६ भाग कच्चामोम ६ भाग प्रथम मोमको पिघलाकर फिर अलसीका तेल मिलाकर तेलिया मक्खी मिलाओ ॥

बावनवीं औषधि ॥

जमालगोटेका तेल ७ माशे सरसों का तेल आधपाव आपस में खूब मिलाकर लगाओ ॥

तरेपनवीं औषधि ॥

खरदल पिसाहुआ अर्थात् राई १॥ छटांक ताड़पीन

का तेल १। तोले सरसेंा का तेल पावभर खूब आपसमें मिला कर लगाओ ॥

चौवनवीं औषधि ॥

पशुके कीड़े वा जूं जहां पड़ी हों ॥

सरसेंाका तेल १ सेर पिसीहुई गंधक १॥ छटांक रालका तेल २॥ तोले ताड़पीन १। तोले इन सबको खूब मिलाकर जहां कीड़े वा जूयें पड़गई हों वहां पर लगाओ ॥

पचपनवीं औषधि ॥

सेंकने की रीति ॥

बहुत गरमपानी फुलालैन वा कंबल के टुकड़े में लगाकर पशुके शरीर में आध घंटे खूब सेंको परन्तु इसका ध्यान रहे कि जिस स्थान को सेंकना है वह ठंडा न होने पावे फिर उस स्थान को सूखे कपड़े से खूब सुखालो तब यह दवा मलो सरसें का तेल ४ भाग ताड़पीन का तेल २ भाग इन्हें खूब मिलाओ ॥

छप्पनवीं औषधि ॥

जानवर के स्थान धोने के लिये ॥

गंधक को करछे में रखकर जिसस्थान में जानवर बंधा हो उसमें धूनी दो और उस थान को आध घंटे तक

थोड़ासा बन्द रक्खो वा उस समय तक बन्द रक्खो जब तक जानवर को धूनी से खांसी आने लगे ॥

सत्तावनवीं औषधि ॥

धूनी ॥

गंधक वा रालको किसी लोहे के पात्र में रखकर आगपर रक्खो और बैल वा गौको उसके सामने खड़ाकर दो जिससे धूनी उसके ब्रह्माण्ड में पहुंचे—परन्तु धूनी देने में इसका ध्यान रहे कि जानवर का दम घुटने न पावे और गंधक वा रालका धुआं भी उसके मस्तक में पहुंचे इसलिये कि जो जानवर केवल गंधक वा रालका धुआं पीजायगा और उसके साथ हवा न पीयेगा तो मर जायगा ॥

अट्ठावनवीं औषधि ॥

पुलटिस ॥

भूसी को गरम पानी में ऐसा गूंधो कि गाढ़ी लेही के समान होजाय उसे कपड़े में रखकर उसपर थोड़ासा तेलमलदो और उसे बांध दो परंतु जो घाव में पीड़ा अधिक होतो पुलटिस पर पीसाहुआ कोयला छिड़क कर घावपर लगाओ और उसे घड़ी २ बदलते रहो ॥

उनसठवीं औषधि ॥

अलसी का मांड़ पशुके लिये ॥

अलसी १॥ पाव पानी ४ सेर अलसी को पानी में हलका उबालदो और घंटे भर उसे खूब चलाते जाओ फिर उस जोशांदे को कपड़े में छानलो और थोड़ासा नमक मिलाकर जानवर को दो परंतु पहिले ठंढाकर लो ॥

साठवीं औषधि ॥

चांवल का मांड़ ॥

चांवल ३ पाव पानी ५ सेर चांवल को डेढ़ घंटेतक खूब उबालो फिर कपड़े में छानलो और खूब ठंढा करके थोड़ासा नमक मिलाकर दो ॥

इकसठवीं औषधि ॥

पिचकारी बनाने और देनेकी रीति ॥

एक फुट लंबा औ आध इंच चौड़ा बांसका टुकड़ा लेकर उसके सिरे छीलकर गोलकरलो और एक चमड़े की थैली जिसमें डेढ़सेर पानी आजाय और जिसकी लंबाई डेढ़ फुट और चौड़ाई ४ वा ५ इंच होलेकर उसकी एक ओर इतना बड़ा छेद करो कि उसमें उस बांसका एक सिरा आजाय उसथैली को बांस के सिरे में बांधो इसप्रकार से कि पानी बांस और थैली के बीच मेंसे बहने न पावे वरन नलीके भीतर चलाजाय और जब पिचकारी देने लगो तो बांसके सिरेपर तेलमललो और

उसे गुदा के छिद्र में दाखिल करो और एक हाथ से उसे पकड़े रहो और दूसरे हाथ से चमड़े की थैली का मुख उठाये रहो और किसी मनुष्य से कहो कि उस थैली के मुंह में अमल डालता जाय जिससे वह धीरे २ मलाशय तक पहुंच जाय ॥

बासठवीं औषधि ॥

कोमल पिचकारी विरेचक ॥

दो सेर गरम पानी में इतना साबून मिलाओ कि उसमें झाग उठने लगे और उसमें छटांक भर वा डेढ़-छटांक सरसों का तेल मिलादो और खूब घेंपकर ऊपर लिखे हुये हुक्म से अमल करो ॥

तिरसठवीं औषधि ॥

अलसी का गरम जुशांदा २ वा ३ सेर खाने का नमक आधी वा १ छटांक ताड़पीन १ छटांक इन सबको खूब मिलाकर अमल दो ॥

चौसठवीं औषधि ॥

बद्ध कोष्ठ करनेकी रीति ।

चांवल का खूब गाढ़ा मांड १ सेर अफीम ८ माशे खूब मिला कर अमलदो ॥

पैंसठवीं औषधि ॥

कीड़े दूर करने की पिचकारी ॥

तिली का तेल आधसेर ताड़पीन २॥ तोले खूब मिला-कर गरम करलो और अमल दो ॥

छयासठवीं औषधि ॥

सीटन अर्थात् नाथने की रीति ॥

पशुके शरीर में तीक्ष्ण चाकू से $\frac{3}{4}$ इंचका चीरा करो और इतनेही प्रमाण का एक और चीरा करो जिसमें पहले चीरे से दो वा तीन इंच का अन्तर हो उसके पीछे घोड़े के बाल वा डोरा बटकर और उसे बड़ीसी सुई में पिरोकर प्रथम चीरे में डालकर शरीर के भीतरही भीतर दूसरे चीरे तक लेजाओ उसके पीछे उस डोरे के दोनों सिरोंको मिलाकर खूब दृढ़गांठ बांध दो परंतु इसका ध्यान रहे कि वह गांठ दोनों चीरों के बीच में शरीर को न दबा वे—दोनों चीरों और उसके आस पास की खाल पर दिनभर में तीन चार बेर औषधि नंबर ४९ में लिखा हुआ मरहम लगाओ जिससे घावों पर मक्खियां बैठकर घाव न बढ़ादें और उस नाथ में पीड़ा न बढ़जाय—गौ वा बैल के ग़ब ग़ब अर्थात् कंठ के इधर उधर की खाल-स्टीन अर्थात् नाथने की यह रीति है कि एक तीक्ष्ण सुई में बटा हुआ डोरा पिरोकर ग़ब ग़ब को छेद करके डोरा वार पार पहुंचाय दें ॥

सड़सठवीं औषधि ॥

जानवर को जुल्लाब पिलाने की रीति ॥

एक मनुष्य जानवर के बांई ओर खड़ा होकर उसके सिरको इतना उठावे कि वह सिर पीठ के सामने रहे और दूसरा मनुष्य उसके दाहनी ओर खड़ा होकर अपने बांए हाथ की अंगुलियां जानवर के मुखमें डालकर उसका होंठ और गलफड़ा रसान से खेंचे रहे जिससे उसका मुख ऐसा सीधा खुलारहे जैसा नल होता है ॥

फिर जिस बोतल में जुल्लाब की औषधि भरी हो उसका मुंह वह जुल्लाब देने वाला अपने दहने हाथ से जानवर के खुलेहुये मुंह में रसान से डाले और थोड़ा जुल्लाब बोतल में से उसके मुंह के भीतर छोड़ दे और जब जानवर पहिला घूंट पीले तो इसी प्रकार एक २ घूंट पिलाते जांय यहां तक कि जुल्लाब की सब औषधि पीजाय और इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिये कि जब जानवर को जुल्लाब पिलावें तो मुख्य करके उस जानवर को जिसके गले में जलन होती हो तो थोड़ा २ जुल्लाब पिलावें और जब जानवर खांसे वा खांसना चाहे तो जुल्लाब देनेवालेको चाहिये कि उसका मुंह तुरंत हाथ से छोड़ दे जिसमें जानवर सिर झुकाकर खूब खांसले और गटई में औषधि उतर कर उच्छू न होजाय जिस समय जानवर खांसना चाहे उस समय जुल्लाब देने वाला उसका सिर न छोड़ दे कि थोड़ीसी औषधि उसके नरखरे में चली जाकर उसकी मृत्युका हेतु होजाय—जुल्लाब देनेके लिये तांबा वा पीतल आदि धातु की बोतल जैसी अंगरेजी शराब की बोतल होती

है बहुत ठीक है परन्तु जो ऐसी बोतल न मिल सके तो शीशे की बोतल में जुल्लाब पिलावें परन्तु इसका ध्यान रहे कि जानवर दांतों से चबा कर उसे तोड़ न डाले ॥

हस्ताक्षर जे० एच० बी० हेलन साहिब

पशु चिकित्सा के डाक्टर जो बंबई की फ़ौज में नियत हैं

स्थान कलकत्ता ७ नवम्बर सन् १८७१ ईसवी

इति